क्रान्तियोग

क्रान्तियोग

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KRANTIYOG (क्रान्तियोग)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-5-2
दाम: 250/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

अनुक्रम:

क्रान्तियोग

गामक हवा-पानि खा-पीब कऽ टहैल-बुलि जीवन काका दरबज्जापर अबिते पत्नीकेँ चौकैठ लागल ठाढ़ देखलैन। ओना, मनमे पहिने ई उठलैन जे किछु बात परिवारक जरूर अछि जे पत्नी केबाड़क चौकैठ लागल ठाढ़ छैथ, नहि तँ अखन अँगना-घरक काजक बेर छी, कोनो काजमे लागल रहितैथ...।

मुदा लगले विचार बदैल गेलैन, बदैल ऐ दुआरे गेलैन जे जहिना कोनो नव चीज भेटलापर खुशी होइ छै जइसँ रंग-रंगक विचार मन: स्थितिकेँ सेहो खुशिया-खुशिया अपना रंगमे रँगैत रहैए, तहिना जीवन काकाकेँ भऽ गेलैन। दरबज्जाक ओसारपर चढ़िते बजला-

“पहिने एक गिलास पानि पिआउ, पछाइत चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।”

‘विचार करबाक अछि’ सुनि कामिनी काकीक मन पहिने ठमकलैन पाछू ठहकलैन, मुदा लगले पाछू उनैट तकली तँ बुझि पड़लैन जे किछु बात जरूर अछि। आन दिन अपना मने की विचार करै छला की नइ करै छला से कहाँ कहियो कहै छला। यहए ने हुकुम दइ छला जे अमुक काज करू वा अमुक काजक की भेल से कहू। मुदा ‘विचार करबाक अछि’ कहलैन हेँ..!

खुशीमे विनोद घोरि काकी बजली-

“हम कोन जोकरक छी जे विचार करब?”

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे कनी कचोट जरूर भेलैन मुदा चोट लगलापर जेहेन मन चोटाइए से नहि भेलैन। अपनो मन गवाही देलकैन जे अखन तकक जिनगीमे पत्नीकेँ विचारवान बुझि विचारीए कहिया बुझि कोनो विचार केलौं। तँए पत्नी जे बजली से कोनो अनचितो तँ नहियेँ बजली अछि।

पत्नीक बातकेँ विचारमे विचरित करैत जीवन काका बजला-

“जइ-जोकर छी सएह ने दुनू परानी मीलि विचार करब।”

अपन उठैत जिनगीक रंग आ पतिक लबैत विचारक भंग देखि कामिनी काकीक अन्तर्मन बिहुसि उठलैन। बिहुसिते आँखि उठा पतिक आँखिमे गाड़ैत मन मिलबैत बजली- “चाहक ओरियान करि कऽ सभ किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटामे पानि सेहो आनि कऽ रखने छी। बैसू लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।”

नहलापर दहला जहिना फेकल जाइए तहिना सोलहन्नीपर बत्तीसअन्नी फेकैत जीवन काका बजला- “शुभ काजमे बिलंम करब मूर्खता हएत। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब ओकर सुआद बुझब-परखब ताबे अहूँकेँ चाह बनि जाएत।”

अपन काजमे बिसवासक रंग चढ़बैत कामिनी काकी बजली-

“से किए ने बनत, भेल तँ दू गिलास दूध-पानि औंटैक अछि।”

कहि कामिनी काकी आँगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटामे पानि रखले रहैन, लोटा-गिलास नेने काकी दरबज्जापर पहुँच पतिक आगूमे रखि देलखिन। ओना, मनमे नव-नव विचार जरूर उठैत रहैन मुदा चाह बनाएबकेँ जरूरी बुझि किछु ने बाजि चोटे आँगन घुमि गेली।

अदहा गिलास पानि पीबैत-पीबैत जीवन काकाकेँ विचारक

तरंग तेना तरंगित कए देलकैन जे गिलास चौकीपर रखिते पैछला जिनगी दिस मन हुमैड़ कऽ घुमैड़ पड़लैन। मनमे उठलैन- अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तैसंग पारिवारिक जिनगी...। मुदा अन्तहीन रस्ताक जहिना ओर-छोर नहि होइए तहिना जीवन कक्काक मनमे उठए लगलैन। दुनू परानीक बीच तीस बर्खक जिनगी छेलैन। मुदा अन्तहीनो रस्ताकेँ तँ लोक खँतिया कऽ खुटिया अपन-अपन रस्ताक सीमाकेँ तय कैये लइए।

अखन तक माने पचास बर्खक अवस्था धरि जीवन काका वएह जिनगी धारण केने आबि रहला अछि जे गाम-समाजक छेलैन। ओना, मनमे ई बात जरूर उठलैन जे अदहा जिनगी रीब-रीबे मे चलि गेल। मिरचाइयेक गुण-सोभाव जकाँ मनुक्खोकेँ तँ अपन गुण-सोभाव होइते अछि। मुदा जे मनुक्ख केलक-धेलक किछु ने आ खाइत-पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक वएह जिनगी ने रीब-रीबाएले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण-पोषण करैत किछु आगू धरि डेग उठबैत चलए। ओना, डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। जेना एक भेल आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीचमे तेसरो तँ ऐछे जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछू दिस ससरल बीचमे ठमकल चलैत रहल। ओना, आगू दिस डेग बढ़ाएब आकि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन सेहो अछि, एके कारण दुनूक नहि अछि। आगू दिस बढ़ैक जहिना दुनू कारण अछि तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दूटा कारण तँ अछिए। माने ई जे जहिना आगू दिस उचित डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन डेग जइमे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना निहित अछि आ दोसर अछि- जइमे केकरो मंगल कामना नहि भऽ अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दू कारण अछिए। पहिल, बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी आ समय निकैल कऽ

आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल मुँह तकैत रहलौं। तहिना दोसर कारण ईहो तँ ऐछे जे समैयक संग चलैमे पानि-पाथर आ बिहाड़िक एतेक चोट पड़ल जे लाखो चेष्टा केलाक पछाइतो जिनगीक डेग पाछूए मुहेँ घुसैक गेल। माने ई जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ साधने छीना गेल आ समैयक थपेर ओकरा थोपरा कऽ निच्चाँ उतारि देलक...। तही बीच चाह नेने कामिनी काकी पहुँचली। पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल विरहीन जकाँ विरहाएल छैन।

मुदा लगले कामिनी काकीक मनमे एकटा नव विचार उठलैन। विचार उठलैन जे मारि खाएल वा चोटाएल पतिक पत्नीए एहेन औषधि अछि जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित करैत ओइपर मलहम-पट्टी जेहेन कए सकैए, कियो दोसर तँ ओइ तरहक नहियेँ कए सकैए। कोखिक जनमौल माइयो तँ मात्र बेटाक बेथा देखि अपन नयनधारमे मोनि फोड़ि बेथा बाँटै चाहै छैथ मुदा तीत रोगक दवाइ तीतेसँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठोसँ छोड़ाएल जाए ई तँ सोलहन्नी सम्बन्धपर निर्भर अछि।

चाहक गिलास जीवन काकाकेँ हाथमे पकड़बैत कामिनी काकी बजली-

“आन दिनसँ कनी बेसी चीनियोँ, चाहो पत्ती आ दूधो देल चाह अनलौं हेन, तँए कनी सुआदि-सुआदि पीबो करब आ रसिक जन जकाँ रसो ग्रहण करब।”

पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन मनक बेथाकेँ मनेक मनसँ मनबैत मुस्कियाइत बजला-

“अहाँ हाथक चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब तँ एहेन सुआदे केकरा हाथक चाहमे भेटत जे रस नइ बुझबै।”

अपन सुतरल विचारवाण देखि कामिनी काकीक मन हलैस कऽ हरिया गेलैन, हरियाइते बजली-

"अपनो मन होइए जे जोड़ोजन एकठाम बैस संगे-संग चाह पीबितौं।"

विचरणक दुनियाँमे विचड़ैत जीवन कक्काक मन रहबे करैन, बजला-

"एहेन दिन कहिया पाएब जे जोड़जनक चाहो एकरंग रहत आ जोड़ी बनि सुआदि-सुआदि चाहो पीब आ रसाएल गपो-सप्प करब।"

पाछू ससरैत माने विचारकेँ पाछू ससारैत कामिनी काकी बजली-

"अपना सोहंतगर बुझि पड़ैए?"

'अपना सोहंतगर' सुनि जीवन काकाकेँ विचारक बानि सुबानि बुझि पड़लैन। बजला-

"किए ने बुझि पड़त।"

नहलापर दहला फेकैत कामिनी काकी बजली-

"अपना जँ प्रेमवश कनी-मनी नीको लागत तँ परिवारो आ समाजो धुर-छी कहबे करत किने?"

डमहाएल-कोशाएल आम हौउ आकि लताम वा कोनो आने फल डमहेला पछाइत ओ पुन: खिच्चा नहि बनि आगू दिस बढ़ि बोनेबे-पकबे करैए। तैठाम जँ परिवारे माने परिवारेक लोक आकि समाजे जँ नेनमैत वा बलउमकी कहबे करत जे आगू खिच्चा बनत, आकि एहेन विचारकेँ जँ धुर-छीहे कहत तँ ओकरा मानबो तँ जीवन रेखकेँ पाछू दिस मोड़ब भेल किने..? परिपक्व होइत जीवन

कक्काक विचार फुटि पड़लैन। फुटिते मुहसँ बहरेलैन- “परिवारे आकि समाजे जेकरा धुर-छी कहि हँसैए, जँ ओकर गुण-दोषकेँ परखनहि कियो अपनाकेँ लोक-लाजसँ लज्जित बुझत तखन एको डेग आगू ससैर सकैए।”

ओना, जेहेन विचार कामिनी काकीक मनमे तरंगित होइ छेलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक बात सुनि मन डगमगेलैन। डगमगाइक कारण भेलैन- एक दिस पतिक विचार जे जीवन साथीक रूपमे हाथ पकैड़ माता-पिताक लगसँ अनने छैथ आ दोसर दिस अपन मनक विचार से उनैट रहल छेलैन जे माइयो-बाप तँ स्वेच्छासँ दान-सरूप जीवन दान देने छैथ, तैठाम पति छोड़ि दोसर के अछि, जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौलकेँ लोक-लाज माने अपन जिनगीक लाजकेँ अपने किछु विचारने बिना मानि रूकबो तँ धोखा छी। हमर तँ सभ किछु यएह ने छैथ। निधोकसँ डेग उठाएब तखन ने हएत जखन अपन ऐगला समय लेल अपन आगूक ओहन डेग तेना उठाबी जे गछारल जिनगीकेँ ठेलैत-तोड़ैत वा कुदि कऽ टपि जाइ।

मनक कलशैत विचारमे विचड़ैत कामिनी काकी बजली-

“जखन एते प्रेमसँ चाह बनौने छी, तैबीच जँ कोनो कविकाठी फेक चाह पीबैक मनकेँ दुरि कए दिऐ, ई हमरा सन लोकक लेल केहेन हएत?”

कामिनी काकीक सहगर विचार देखि जीवन काका बजला-

“जँ गपे-सप्पमे चाहक चाह आ ओकर गुण-सुआदकेँ पानि बना देब सेहो केहेन हएत?”

ओना, कामिनी काकी आ जीवन कक्काक बीच अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओ ने तीते रहलैन आ ने मीठे बल्कि तीत-मीठ दुनू

रहलैन जइसँ एक वस्तुक गुण जे हजारो-लाखोक संख्यामे किए ने हुअए मुदा ओकर रूपो, गुणो आ सुआदो तँ एके रंग ने होइए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी, संख्यामे पाँच अछि। ओइमे सँ एकटा मिथिलांचलमे खेलौं, दोसर असाममे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरलमे खेलौं, चारिम गुजरात वा राजस्थानमे खेलौं आ पाँचम पंजाब वा कश्मीरमे खेलौं, की ओकर गुण-सुआद जगह बदलने बढ़ैत थोड़े जाएत आकि वएह रहत जे मिथिलांचलमे छल। एकर माने ईहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदहमे ई गुण छइ। ई गुण सभ ठामक सभ वस्तुमे अछि...।

चाहक गिलास ठोरमे सटौने कामिनी काकी जीवन काका लग पहुँचली। ओना, कामिनी काकीकेँ चाहक गिलासमे मुँह सटौने देखि जीवन कक्काक मनमे थोड़ेक कुवाथ भेबे केलैन। कुवाथ ई जे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लगसँ पीबैत-पीबैत दरबज्जा धरि भरि पोख पीब लेती। ई तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद बुझलिऐ, ताबे चाह ससैर कऽ पेटमे गेल जइसँ मनमे फुहरामी जागए लगल। फुहरामीकेँ जगिते मनमे फरहर विचार उठए लगल।

ओना, कनी-मनी जीवन कक्काक मन कड़ुएलैन जरूर जइसँ क्रोधक बिनबिनी जगलैन मुदा मन तँ फुहराम रहबे करैन। क्रोधकेँ घोपैक विचार मनमे फुटलैन। विचार फुटिते मन विचरण करए लगलैन जे क्रोध करब नीक कि अधला? क्रोध तँ केतौ बाहरसँ लोकमे नइ अबैए, ई तँ लोकक मनमे सदैत जगल रहैए जे सभमे रहबे करत आ रहिते अछिए। मुदा तैबीच एकटा विचारणीय प्रश्नो तँ ऐछे जे जँ क्रोध सोल्होअना अधले छी तखन लोक किए ने ओकरा सामुहिक रूपमे पानि बहैक नालीमे वा कचड़ामे फेक दइए? प्रश्न अछि क्रोधक रूपकेँ देखब। मनक विचार कहियौ आकि शरीरक ऊर्ज-शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध तँ छी जरूर। मुदा ओकर

सीमा-सरहद की अछि आ केते अछि तेकरा तँ देखैये पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्प शक्तिक प्रहरी छी तँ दोसर दिस पोखैर-झाँखैर आकि धार-समुद्रमे डुमबैबला सेहो तँ छीहे। तँए क्रोध अज्ञानीक अज्ञान पैदा करैबला छी आ ज्ञानीक ज्ञान संकल्पक संगी सेहो छीहे। तँए क्रोधसँ क्रोधी नहि बनि, क्रोधी जिनगी धारण करब, जे जिनगीक पथकेँ सेहो प्रदर्शित करैए।

रसे-रसे मनक कुवाथसँ जे क्रोध चढ़ि रहल छेलैन से समन हुअ लगलैन। समन होइते–माने क्रोध कमिते–कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना जाँतमे, जइमे तर-ऊपर दूटा चक्की होइ छै, दू चक्की रहितो बीचक जे कील होइए ओ एकटाकेँ सक्कतसँ पकड़ने रहैए आ दोसरकेँ ढील रखि फुह खेलाइ-ले छोड़ि दइए। तही बीचमे ने पीसनिहारि वा पीसनिहार बाम हाथसँ हथरा चलबैत दहिना हाथे ओइमे झीक दइए। मुदा ओ तँ रहैए अन्नक झीक तखन हमरा जे झीकैए, माने हाथसँ जे झीक कऽ हथराकेँ चलबै छी ओ की भेल? मुदा लगले जीवन कक्काक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी-ले जँ जातक झीका-झिकीमे लगि जाएब तँ जिनगी ससैर कऽ पहाड़पर सँ निच्चाँ खाधिमे खसि पड़त। तँए दहिना हाथे झीक देलौं आकि बामा हाथे, माने जातमे अन्न देलौं, एहेन-एहेन खोंच-खाँचकेँ विचारेसँ सेरियबैत चलब नीक। जखने एहेन-एहेन विचारकेँ सेरियबैत चलब तखने भाकुर माछ जकाँ सुरकुनियाँ मारि चलि सकै छी, नहि तँ छोट-छीन रहितो इचना माछ जकाँ खढ़े-पातमे तेना ओझरा जाएब जे जेतए-सँ चललौं तेतइ रहि जाएब..!

मने-मन जीवन काका सामंजस करिते छला कि दुनू गोरेक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथमे खाली गिलास पकड़बैत बजला- “अहींक लगाएल पानो खाएब।”

'पानो खाएब' सुनि कामिनी काकीकेँ सुतरलैन। बजली-

"सासुरमे नइ कहियो पान लगेलौं तँ की बुझै छी जे पान नइ लगबए अबैए।"

कामिनी काकीक बात तँ ओते कटुगर नइ रहैन मुदा मनक जे आवेग रहैन–माने बजैक जे प्रवाह रहैन–तइसँ बुझि पड़लैन जे प्रवाहित जरूर छैथ। तँए प्रवाहित प्रवाहकेँ अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला-

"अनेरे ने अहाँ मीठोकेँ तीत बनबए लगै छी। हमर विचार अछि जे जहिना हम पान लगा खा मुँहकेँ लाल बना मुँहक लाली बनौने छी तहिना अहूँ जँ बना लेब तखने ने तोता-तोती जकाँ लाल-लाल लोलक मिलानी करैत ललका तिलकोर ताकबो करब आ देखि-देखि खेबो करब।"

ओना, जीवन काका अपना सुढ़िये बजैत रहैथ मुदा कामिनी काकीक मन जीवन कक्काक 'पान लगाएब' सुनि मोरनी जकाँ मुड़ि गेल रहैन। तँए मने-मन सोचए लगली जे नैहरमे पान तँ जरूर लगबै छेलौं। देव स्वरूप पिताकेँ बुझै छेलिऐन, जन्मदाता सेहो छला, हुनका पान लगा खुअबै छेलिऐन, मुदा ऐठाम तँ दुनू परानी मीलि ने तेसरक जन्मदाता छी तैठाम तँ अनाड़ी छीहे। अनाड़ी ई जे ओहन पत्नी जे ने पान लगबै छैथ आ ने खाइ छैथ...।

बजली-

"किए ने पान लगा कऽ खुआएब। मुदा लगाएब सोझहामे। पहिने गिलास आँगनमे रखने अबै छी।"

ओना, जीवन कक्काक मनमे ठहकलैन जे पत्नी सोझहामे पान लगौती आ जँ एक्के खिल्ली हमरेटा-ले लगबैथ तखन की करब? ओ तँ पान नइ खाइ छैथ..! मन आगू बढ़ि अखाढ़ मासपर

गेलैन। केना धु-धु जरल जेठक रौदमे तपल धरती अखाढ़क पानिक फुहार पड़िते फुहराम भऽ सृजन शक्ति सिरजबैत सृजन करए लगैए आ जरैत धरती हरियाए लगैए। ओना, तीन मौसमक बीच धरतीकेँ छह रूपक रूपो आ रँगो बनैए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धरमो छै आ रूप धरमो छइहे। जइसँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूपमे अन्तर आबिये जाइ छइ। जहिना जाड़क मौसमसँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौल पछातिक जिनगीक रूपमे अन्तर आबिये जाइए, तहिना गरमीसँ बरसात आ गरमी-बरसातक बीचक जे मधुमास अछि, भलेँ ओ जाड़-गरमीक मधुरससँ भिन्न परिस्थितिमे किए ने पैदा भेल हुअए मुदा छी तँ ओहो मधुमासे। तहिना जाड़-बरसातक बीचक सेहो अछिए...।

गिलास धोइ कऽ रखि कामिनी काकी लफरल आँगनसँ दरबज्जापर आबि धमकली-

“लाउ कहाँ अछि पानक समचा।”

गमछाक खूटमे बान्हि जीवन काका पानक सभ समान रखने रहैथ, कन्हापर सँ गमछा उतारि, खूटमे बान्हल पोटरी खोलि आगूमे चौकीपर रखि देलखिन आ अपने कनी पाछू धुसैक देवालमे ओंगैठ गेला।

आगूमे पानक सभ समचा रखि सोझा-सोझी बैस कामिनी काकी पानक पन्नी खोलि पान निकालि एक खिल्ली पातक बैसार केलैन। ओना, मनमे ई जरूर रहैन जे देखिऐ अपने की बाजि रहला अछि। तँए पानक खिल्ली माने पात बैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि कऽ आँगन दिस बढ़ली।

देवालमे ओंगठल जीवन काका आगूमे पसारल पानक पात देखि मने-मन विचार करए लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच

विषमता रहत, जे जीवन संगिनी सेहो छैथ, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। एहेन खाइ तँ जिनगीक क्रियामे अनेको अछि। जाबे तक एहेन-एहेन खाइ बनल रहत ताबे तक चौमास खेत जकाँ समतल समभूम केना बनत? आ जाबे से नइ बनत ताबे समरूप समउपज केना उपैज सकैए। माने ई जे जाबे तक एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हएत, एक गहराइ नहि बनत, ताबे तक समरूप विचार मनमे केना उठत आ ओकर समरूप निर्णय करैत समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकब? संगे-संग आगू बढ़ैले तँ एकरूपताक खगता अछिए। जँ से नहि हएत तँ अनभुआर जगहमे आकि कोनो समस्या एलापर जँ एकरूप भाइयो सकै छी तँ ओहन अपरिचित जगहमे तँ एकरूपता भँग भाइये जाएत जइसँ संगपनामे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाटमे–माने जिनगीक संग चलैमे–विघ्न-बाधा उपस्थित हएत तखन चलब तँ दुष्कर भाइये जाएत। असकर चलब, दोसकर वा दसकर चलब आ दुष्कर चलबमे अन्तर अछिए...।

मुदा जीवन कक्काक मनमे लगले उठलैन जे अखन जे परिस्थिति आगूमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओकरा सोलहन्नी मानियोँ लेब धड़फड़ी हएत। जँ पानक पात पसारि चून लगौने रहितैथ तखन थोड़-थाड़ मानलो जा सकै छल मुदा अखन तँ पहिलुके डेग उठौलैन अछि, जइमे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली पसारैक-बैसबैक, तखन किए ने पत्नियेँपर अखन रहए दिऐन जे आगू की कए रहली अछि। जँ सुहरदे गतिये दोसरो खिल्ली बैसौती तँ बड़बढ़ियाँ। जखन चाह संगे पीलौं तखन जँ पाने खाएब तँ ई कोन बड़का मतहानि भेल जे मनहानि हएत।

मने-मन जीवन काका अपन हारि-जीतक विचार करैत चुप-चाप आँखिकेँ अपन छोट करैत माने दुनू पीपनीकेँ तिरछियबैत

चिन्तक रूप जकाँ देवालमे ओंगठल पत्नीक प्रतीक्षा करए लगला। तैबीच आँगनसँ कामिनी काकी सेहो पहुँचली। पहुँचते अपन जगह पकड़ली–माने पहिने जेना बैसल छेली तहिना बैसली। बैसते जेना सभ किछु बिसैर गेली तहिना पानक पन्नीकेँ हाँइ-हाँइ मोड़ए लगली। ओना, मनमे ई बात जरूर नचैत रहैन जे देखिऐ, अपना बेरमे पति केते इमानदार छैथ। अनका तँ सभकेँ सभ कहैए। कहलो गेल अछि जे 'पण्डित होई जो गाल बजाबा।' गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा पतिकेँ देबैन, ओ हमरे लगौलहा पानसँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल..?

ओना, जीवनो काका गबैद कऽ गबदियाइत गबदी भरि पत्नीक लीलाभूमि देखए चाहै छला मुदा कामिनियोँ काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारली जे शिकार केकर छी आ शिकारी के अछि ई बुझब कठिन हुअ लगल। माने दूटा शिकारी जँ कोनो एकटा शिकारपर वाण फेकए आ दुनू तीरक बीच तिरियाइत शिकार खसए तँ ओइठाम निर्णय करब कठिन भाइये जाइए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल रहैन...। तैबीच कामिनी काकी दोसर वाण छोड़ैत बजली- "पानमे दइले जे चून रखने छी, ओ तेहेन मरचून जकाँ बनि गेल अछि जे पातमे लागबो कठिन अछि तँए कनी पानि देने आँगनसँ अबै छी।"

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे किछु बाजी। बाजी ई जे कहिऐन चाह भेल इच्छा आ पान भेल पेनाइ, माने इच्छाक पूर्ति। मुदा फेर लगले मन मनाही केलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तँए राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्तामे नाच देखब समय नोकसान करब हएत। भाय जखन परीक्षा दइले विदा भेलौं तखन समयसँ पहिनहि जँ नहि पहुँचब तँ अपनकेँ तैयार केना बुझब। ई तँ नहि जे जेना लोक बजैए जे 'भोजक बेर कुमहर रोपने काज थोड़े

चलत।' मुदा जँ अही विचारकेँ ऐ रूपेँ राखल जाए जे भोजमे कुमहरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तखन ने कुमहरक संग न्याय भेल, से तँ नहियेँ अछि...। विचारक बोनमे तेना जीवन काका ओझरा गेल छला जे पत्नीक बात अनसुनियेँ रहि गेलैन। माने मने-मन जीवन काका विचारिये रहल छला तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि दइले आँगन चलि गेली।

कामिनी काकीकेँ परोछ भेने माने दरबज्जासँ आँगन दिस बढ़ने जीवन कक्काक मनमे दोसर विचार फुनफुना कऽ फुनकलैन। फुनैकते विचारए लगला जे पानक जे सरंजाम अछि–माने पात, चून, खएर, सुपारी, जर्दा इत्यादि–ओ तँ परिवारक आमदनीक खर्च भेल, जे दुनू परानीक भेल, मुदा खेबाकाल हम खाएब आ पत्नी नइ खेती, ई तँ सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत तँ रोग भगतै आ निरोग खाएत तँ रोग बढ़तै।

तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि देने दरबज्जापर पहुँचली। दरबज्जापर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखि पत्नीक मुँहक चुहचुहीपर देलखिन। ओना, कोनो काज करैक तीन अवस्था होइए आ तीनू अवस्थाक चुहचुही सेहो तीन रंगक होइए। पहिल जँ काज सफलपूर्वक होइक संभावना रहल तखुनका चुहचुही, दोसर काज सफल-असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखुनका चुहचुही आ जखन काज सफल नइ होइक संभावना स्पष्ट भऽ गेल रहल तखुनका चुहचुही...।

ओना, कामिनी काकीक चुहचुही देखि जीवन काका बुझि गेला जे पत्नीक चुहचुहीसँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार हुनका हाथ छैन। माने पत्नीक सफल विचार छैन। जीवन कक्काक मनमे लगले दोसर विचार जगलैन। विचार जगिते बिसवास सेहो

जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे जहिना चाहो पीबैकाल कहने छेलिऐन जे दुनू गोरे संगे-संग एकठाम बैस चाह पीब। जखन एकरूपताक प्रस्ताव रखि दुनू गोरे संगे चाह पीलौं, तखन चाहक पछातिक ने पान भेल। जखन हुनको बुझले बात छैन तखन जँ पानमे कटौती करती, माने हमरा-ले लगौती आ अपना-ले नइ लगौती, तइमे हमर कोन दोख। किए ने हमहीं छातीपर चढ़ि फटकारि कऽ कहबैन जे 'यएह अहाँक इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा छोड़ि कऽ भागि रहल छी। जखन अपने हक-हिस्सा छोड़ि कियो पड़ा जाएत तखन दोख केकर?'

अपन सुतरल विचारक मथनसँ जीवन कक्काक मन कलिएलैन। कलियाइते मनक विचारकेँ मनेमे रससँ रसरसबैत गुड़-चाउर फाँकए लगला।

पानमे चून लगबैसँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा कऽ तकला जे किछु बाजि रहला अछि कि नहि। ओना, जीवन कक्काक मन मनेमे मन्हुआ कऽ मुरझाए लगलैन। एकटा चूक अपनो जीवनमे जरूर भेल अछि। ओ ई जे अखन धरिक जिनगीमे आदेश दैत रहलयैन जे अमुक काज करू, अमुक काज नइ करू। मुदा अपना विचारमे केना एहेन विचार-विचरण अबितैन जे अपने ई बात बुझए लगितैथ जे अमुक काज करैक अछि आ अमुक काज नइ करैक अछि। ई तँ चिन्तनक अतल तल ने भेल जे अखन तक छुटल रहल! खाएर जे रहल, पाछू उनैट देखए लगब तँ फेर सम्बन्ध पछुआ जाएत। तँए नीक हएत जे विचारक उत्स केना पत्नीक मनमे रोपि दिऐन जे स्वयं ओ पत्नीक रूपमे ठाढ़ भऽ चलए लगती। अगर पति अपनाकेँ पतित्वक रूप धड़ि-पकैड़ चलैथ आ पत्नी जँ अपन पत्नीत्वक रूपक धड़ि-पकैड़ चलैथ तँ जिनगीमे दोषारोपण केतए

हएत। जँ एक-दोसराक बीच दोषारोपण नइ हएत तखन दुषित मन केना बनत। आ जँ दुषित मन नहि बनत तँ जिनगी दूषित भऽ दुखित केना हएत..!

जीवन कक्काक मन कलशलैन, कलैशते बजला-

“चाहे-पानमे दिन बिता लेब तखन तँ भेल जिनगीक मोटा उठाएब आ मोटेक विचार करब। केतेकाल भऽ गेल कहना जे किछु विचार करब अछि।”

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली-

“आब पानक खर्चा बढ़ि जाएत।”

पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला-

“जाबे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताबे मुँहमे लाली केना औत। आ जाबे मुँहमे लाली नइ औत ताबे जिनगीकेँ जिनगी केना बुझबै।”

ओना, जीवन कक्काक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मन्दिरक पुजारी जकाँ अपनाकेँ समर्पित करैत माने तियागक पराकाष्ठा देखबैत बजली-

“अहीं ने हमर सभ किछु छी। अहींक आश्रयमे ने हमहूँ बसब।”

पत्नीक सिनेहसँ बोझिल बदलाएल बादल जकाँ विचारक रूप देखि जीवन काका बजला-

“जाए दियौ, जहिना समयकेँ तीत-मीठ सुआद नहि बुझि गेमेलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आब से नहि, आइ जिनगीमे किछु एहेन काजसँ संकल्पित हेबाक अछि जइसँ पति-पत्नीक पहचान बनए।”

हँसैत कामिनी काकी बजली-

“तइले कोनो हाथ थोड़े पकड़ै छी, सदिकाल तँ हाथ पकड़िये चलए चाहै छी किने, जहिना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घरसँ विदा केने छला तहिना पकड़नहि छी आ पकड़नहि रहब।”



शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

उचितवक्ता

चारिम दिन बेरूपहर जे फटेसर भाय ओछाइनपर खसला से खसले छैथ। ओना, सभ दिन नजैरपर पड़िते छला आ गामक नीक-बेजाए गपो-सप्प होइते आबि रहल छल, मुदा तीन दिनसँ नइ भेटल छला तँए मनमे भेल जे घरेपर जा खोज-पुछारि करिऐन जे केतौ बाहर गेल छैथ आकि मन-तन खराप भऽ गेलैन।

फटेसर भायसँ भेँट करैक विचार मनमे पक्का भऽ गेल। मुदा लगले उठि गेल जे गामेक बात छी तहूमे एक्के टोलक, जँ कोनो तेहेन रोगे-वियाधि आकि कोनो तेहेन काजेसँ जँ बाहरो गेल रहितैथ तँ उड़न्तीयो तँ सुनबे केने रहितौं, सेहो नहियेँ सुनलौं.., तँए बहुत विषाक्त स्थिति नहियेँ अछि जे जिज्ञासाक रूपमे भेँट करए जाएब। भेँटो-घाँट करैक तँ अपन सीमा अछि। मन आगू-पाछू करए लगल। मुदा विचार तँ पक्का बनि गेल छल जे फटेसर भायसँ भेँट करए जाएब। फेर लगले मन बदलए लगल। बदलैत मनमे विचारक रस्तो बदलए लगल। रस्ता बदैलते मन बदैल गेल जइसँ विचारो बदैल गेल। विचारकेँ बदैलते विचार केलौं जे सोझे डारिये भेँट करए नइ जाएब, ओमहुरका जँ कोनो काज हएत तँ सेहो कऽ लेब आ रस्ते-रस्ते भेँटो कऽ लेबैन। सएह विचारि दुनू हँसूआ लऽ धार करबैले कमरसाइर विदा भेलौं।

फटेसर भायकेँ गामक लोक केतेको नाओंसँ जनबो करै छैन आ अपन-अपन सम्बन्धे नाउओं लइ छैन। जेना कए गोरे फटेसर

भायकेँ ‘लबड़ा’ कहै छैन, किछु गोरे ‘लेबड़ा’ सेहो कहै छैन, तहिना किछु गोरे ‘फटहा’ कहै छैन, तँ किछु गोरे ‘उचितवक्ता’ सेहो कहै छैन। ओना, हम आइये नहि जखन हाइये स्कूलमे ओ दसमामे आ अपने अठमामे पढ़ैत रही तहियेसँ ‘फटेसर भाय’ कहै छिऐन। विद्यार्थी तँ ओते नीक नहियेँ छला मुदा पाइबला बापक बेटा रहने किताब बेसी कीनै छला, संग-संग ईहो गुण छेलैन जे जँ कियो कोनो किताब पढ़ैले मंगै छेलैन तँ जरूर दइ छेलखिन। से चाहे ओ पढ़ल होनि वा नहि। माने ई जे फटेसर भाय जखन किताब किनैले दोकानपर जाइ छला तखन दोकानदारोक विचार आ दोकानपर जे किताब कीनिनिहार गहिंकी सभ रहै छल तिनकोसँ विचार लैत एक-एक विषयक चरि-चरि-पँच-पँचटा किताब कीनै छला। मुदा पढ़ैक नामपर किताबक नाओं, लेखकक नाओं आ किताबक दाम रटि लैथ बाँकी किताबेमे छोड़ि दइ छेलखिन। जइसँ जेकरा किताब कीनैक पाइ नइ रहै छेलै ओकरो थोड़े सहुलियत भेट जाइ छेलै, जइसँ निचलो किलासक विद्यार्थी आ अपनो किलासक संगी सभ ‘भाइये’ कहै छेलैन माने ‘फटेसर भाय’। ओही सम्बन्धे हमहूँ ‘फटेसर भाय’ कहिते आबि रहल छिऐन। कमरसाइर पहुँचते लखन ठाकुरकेँ पुछलिऐ- “लखन, फटेसर भाय गाममे छैथ की नहि?”

लखन ठाकुर रसगर लोक, माने गामक मनचोभिया नाचसँ लऽ कऽ कीर्तन मण्डली तकक रेहल-खेहल। सभ कम्पनी माने गामक जेतेक गीत-संगीतसँ जुड़ल संगठन अछि, सबहक बीच रहनिहार लखन ठाकुर। तँए सदिकाल मनमे कखनो सुपेन धार तँ कखनो गहुमा, कखनो भुतही-बलान तँ कखनो कमला धार बहिते रहै छै जइसँ मन पीताएल कम मुदा प्रीताएल बेसी रहिते छइ।

हमर बात सुनिते लखन ठाकुर कनडेरिये आँखिये तकलक। भलेँ ओकरा नजैरमे गहुमा-कोसी बहैत हौउ मुदा अपना नजैरमे तँ

गामक स्वच्छ पोखरिये-सरोवर छल। ओना, देखै-देखैक अपन-अपन नजैर अपन-अपन विचारक धारमे सेहो होइते छइ। फटेसर भाइक परिवारक कोनो समाचार क जानकारी नइ छल, सामाजिक रूपमे लखन ठाकुरसँ पुछने छेलिऐ। मुदा लखन ठाकुर शिकारी लोक, ओकरा पता लगि चुकल छेलै जे फटेसर भाइक जेठ बेटी–जे कौलेजमे बी.ए. ऑनर्सक तेसर पार्टमे पढ़ैए–चारिमे दिन एकटा कौलेजीए लड़काक संग गामसँ पड़ा गेल। तँए लखन ठाकुरकेँ हमरा बातक विशेष अर्थ लगलै। विशेष अर्थ लगने विशेष भाषामे बाजल-

"भाय साहैब, बिनु खरचे बेटी घरसँ विदा हुअए आकि खेतेमे कुशियार बिका जाए तँ ओ तेलोसँ चिक्कन भेल किने!"

ओना, लखन ठाकुरकेँ हमहूँ चिन्हते छी जे रसिके नहि मखोलिया सेहो अछि, तँए ओकरा गपकेँ ओही भावमे हमहींटा नहि आनो-आन देखबे करैए। एक तँ पसारी लखन ठाकुर जेकरा दोकानपर दू-चारि आदमी अपन-अपन काजे रहिते छै, तैबीच ने भरि दिन लोकेक संग बितबैए। लोकक बीच जेकर जीवन चलै छै ओ जँ कर्कश बनि मर्कश बनल रहत तँ भरि दिन रक्के-टोकी आ झगड़े-झंझट होइत रहत। मुदा जिनगी तँ ओहन बनि गेल रहैए, माने लोकक बीच तखने लोक बसि सकैए जखन बेकतीगत सभ योगक क्रिया या तँ सम्पन्न केलाक पछाइत वा छोड़िये कऽ सहयोग क्रियामे लागत। जखने लोकक बीच बसब तखन सहयोग क्रियाक सभसँ बेसी खगता होइते छइ।

लखन ठाकुर अपन बोली-वाणीकेँ नाचक मंच परहक जे अछि ओकरे भरि दिन लाड़ैत-चाड़ैत रहैए। जइसँ तमसाएलो लोकक तामस कमकमाइत कमिये जाइ छइ। कमरसाइरमे दुइए गोरे रही। तैसंग लखन ठाकुर सभ दिनसँ जेठ बुझि धाक करिते अछि। ओना,

गप-सप्पक क्रममे कखन लखन ठाकुर ऐंड़ी चढ़ि ऐंरिया लगत आकि टिक चढ़ि टिकिया लगत ई तँ पारखीए परेख सकैए, सभ नहियेँ परेख सकैए। ओना, लखन ठाकुर अपने अपनाकेँ परेख रहल अछि वा नहि ई तँ ओ जानए मुदा जे कठिन श्रमक समय–घन्टामे निर्धारित–अछि तइमे ओकर बेसी समय जाइ छै तइसँ बुझि पड़ैए जे भरिसक ओ अपने अपन जिनगीक बात नहि बुझि पबैए। बजलौं-

“लखन, एना छिड़ियाएल मौगीक गप किए करै छह। जँ आन रहैत तखन सोहंतगरो होइत।”

हमर बात सुनिते लखन अकचका गेल। बाजल-

“भाय साहैब, हमरा ते भेल जे अहाँ लखना बुझि जिनगीक लेख लिख रहलौं हेन, तँए...।”

मनमे भेल अनेरे आलतू-फालतू गप-सप्पमे समयकेँ गमाएब बुड़िबकी हएत। तँए पाहि लगा पहिलुके जे गप छल ‘फटेसर भाय गाममे छैथ की नहि’ तहीपर आबी तँए दोहरा देलिऐ। ओना, गप-सप्पमे पीछराह लोक लखन ठाकुर अछिए। तँए एक्के बेरे धरती नइ पकड़लक। पीछड़ैत बाजल-

“भाय साहैब, फटेसर भाय गाममे छैथो आ नहियोँ छैथ।”

लखन ठाकुरक बातक कोनो अरथे ने लागल। गुम भेल मने-मन विचार करए लगलौं जे ई की कहलक! फेर मनमे उठल जे हाथक चूड़ी देखैले जँ लोक ऐना ताकए लागए तँ ओ कालीए-दास सन काबिल ने भेल। बजलौं-

“से की लखन?”

गैंची माछ जकाँ लखन पीछराहक संग गैंचियाहो तँ अछिए। समाजमे ऐहेन एकटा धारे बहैए जइमे गैंचीए माछ अधिक अछि जे सोझकेँ टेँढ़ करैत-करैत तेना टेँढ़ कऽ देत जे ओकर रूपे बिगाड़ि

देत। तहिना टेँढ़केँ तेना लिबा-लिबा ओइपर जअ-तिल फेकैत नून-मिरचाइ मिलबैत टेँढ़ोकेँ सोझ धार जकाँ बहबए लगैए। लखन ठाकुर बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ ते अपने ओहन खेलाड़ी छी जे गामक उड़ैत सभ कौआक किदैन देखै छी, तखन अनेरे हमर मन टोबै छी।"

ओना, लखन ठाकुर अपना जनैत घुमा-फिरा कऽ सभ बात कहि देलक मुदा नियमक भाषामे नहि कहि साहित्यिक भाषामे बाजल, तँए मन कनी आगू-पाछू करए लगल। पाछू होइते विचार उठल जे किए ने लखनकेँ अपन चेहरा देखा दिऐ। जखन ओ चेहरा देखत तखन अपने विचारि लेत। बजलौं-

"लखन तोरा हम छोट भैयारी बुझै छिअ, एक तँ ओहुना केकरो लग झूठ नइ बाजी मुदा केतौ-केतौ समैयक अँटावेश करैले भाषाकेँ मोड़ए पड़ै छै, मुदा तोरा लग कोनो बात छिपा कऽ थोड़े राखब।"

हमर बात सुनिते लखन जेना पैछले डेगे पाछू दौड़ए लगल। मुदा थोड़ेकालक पछाइत ठाढ़ होइते बाजल-

"ऐ बीचमे गाममे की सभ भेल हेन से नइ बुझलिऐ?"

फटेसर भायसँ आगू बढ़ि लखन गामेक बात उठा देलक। मुदा खढ़ियाक शिकार केनिहारकेँ तँ खढ़ियाएले चालि पकैड़ ने दौड़ए पड़ै छै, बजलौं-

"गाम की कनियेँटा अछि जे गामक सभ बात बुझबै, मुदा किछु बात तँ बुझबे करबै सेहो तँ अछिए"

लखन ठाकुर बाजल-

"उचितवक्ता भायकेँ सभ उचितपना घोंसैर गेलैन!"

ओना, उचितवक्ता सुनि फटेसर भाय बुझि गेलौं, मुदा सभ उचितपना घोंसैर गेलैन से बुझबे ने केलौं। बजलौं-

“की उचितवक्ताक उचितपना लखन?”

ऐगला भौकी मारि लखन बाजल-

“अपनापर तँ एहेन खोदा मियाँ केकरो ने कर।”

एक तँ ओहिना जे बात बुझए चाहै छी, तेकर चारूकातक चबुतरे लखन तेना ने जोड़ि दइए जे अपनो काते-कात घुमै छी जइसँ लगमे गेले ने होइए। सोचलौं एना नहि हएत दोसर रस्ता धड़ए पड़त। मने-मन विचारए लगलौं जे आब की करी। मनकेँ चारू दिस दौड़ेलौं। एकटा युक्ति मनमे आएल। अबिते बजलौं-

“लखन, दुनू हँसुआमे धारो भाइये गेल आब जाइ छिअ।”

जहिना कोनो कथाकार अपन कथाक नाँगैर पकैड़ बेसी आगू बढ़ि जाइ छैथ आ पाछू उनैट जखन तकै छैथ आ बुझि पड़ै छैन जे घरक नमती नमहर भेल जाइए तखन कोनियाँ छपैट जहिना घरकेँ छोट घरवाह करैए तहिना ने ओहो करिते छैथ मुदा से रच्छ रहल जे हमर बात सुनिते लखन ठाकुर बाजल-

“भाय साहैब, एक भोरसँ पसार लगौने छी, लोहा पीटैत-पीटैत डेन-हाथ दुखा गेल आ अखन तक जलखैयो ने केलौं हेन तँए एके मिनट आरो थम्हू सभ कहि दइ छी।”

लखन ठाकुरक ‘एक मिनट’ घड़ीबला छी कि समयबला आकि काजबला से तँ पछाइत बुझब मुदा मनमे एते जरूर भेल जे अन्तहीन समय एक मिनटपर आएल। जखने केकरो मन मिनटक महत् बुझए लगल तखने ओकर घन्टो-दिनक संग जिनगीक महत् बढ़िये जाइए। मुदा तँए एहेन नहि अछि जे मिनटक माने घन्टो आ दिनो नइ होइए। एक मिनटक जे काज रहैए ओ दिनक-दिन कि

मासक-मासो पछुआ नइ जाइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, ओते औगताएल अपनो नहियेँ रही किएक तँ जानियेँ कऽ तँ फटेसर भाइक समाचार बुझए गेल रही मुदा लखन ठाकुरकेँ बहबारि जकाँ बहैत विचारकेँ पकड़ै दुआरे बाजल रही। अकछीपन देखबैत बजलौं-

"अखन जाए दएह लखन, दोसर दिन बुझल जेतइ। बड़ीकालसँ चाह नइ पीलौं हेन से मन छुछुआइए।"

चाहक नाओं सुनिते लखन ठाकुर बाजल-

"भाय साहैब, भने मोन पाड़ि देलौं हमहूँ जलखै केनाइ छोड़ि दइ छिऐ, एक्के बेर नहा कऽ खाएब। कनियेँकालक काजो पसारमे रहि गेल अछि, ओकरा काइये कऽ उठब। भाथी परक चाह तँ नहि पीने हएब, अहीठाम बनबै छी।"

लखन ठाकुरक पसार देखि अपने मनमे हुअ लगल जे अनेरे चाहक बहाना बनेलौं। जे गप कहैक समय लखन एक मिनट बतौने छल से आब आधा घन्टामे चाहे बनाएत। मुदा मनमे भेल फटेसर भाइक समाचारो तँ बुझबे अछि। आइ ने मोबाइल, रेडियो, टी.वी.सँ लोक समाचार बुझैए मुदा गामक पसारोक जगह तँ गामक समाचारक रेडियो-स्टेशने छी। रंग-रंगक लोक आबि अपन-अपन समाचार एतए बँटिते अछि। ओना, भाथीपर चाह लखन ठाकुर सभ दिन बनबैए, जे सोल्होअना चामेक बनल अछि। तेकर चुल्हि बना लखन ठाकुर चाह बनौत, तँए कनी मनमे उत्सुकता आबिये गेल रहए। उत्सुकताक कारण भेल जे जखन कल गड़ौने रही तखन गाममे घघौंज उठबे कएल जे चमड़ाक बनल वासरक कलक पानि अशुद्ध भेल तँए लोक नहा सकैए, दोगा-दोगी पीबियो सकैए मुदा पूजा-पाठ केना हएत। ओना, तरकारी आकि तीमनमे जँ बेराबेरी सामान नइ दए एक्के बेर सभ किछु दऽ देब तखन ओ उसनलहे भेल

किने, चटकदार आकि सुअदगर थोड़े बनत। जखन लोक कलपर नहेबे करत, पानि पीबे करत तखन पूजाक बाँकीए की रहल जे तइले अनेरे लोक मथापची करत। लोकेमे ने देव आ देबेमे ने लेब सेहो अछिए। ओना, अपनो संस्कार डोल-पत्ता हुअ लगल। एक तँ चमड़ाक भाथी तैसंग आगूमे चुल्हि जकाँ नीपैन-बाढ़ैन नहि, मुदा लगले भेल जखन लखन ठाकुर सभ दिन चाह बना पीबिते अछि तखन हमरे कोन छुति। आ जँ छुतियो तँ एकबेरिये ने, बहुबेरिया तँ नहियेँ। नीक जकाँ बुझैले मुँह छोहैन केलौं- “लखन, चाहमे बड़ देरी लगतह, अखन जाए दएह।”

ओना, गप-सप्पक क्रममे फटेसर भायबला बात मनसँ बहैट गेल छल। आगूमे आबि गेल छल भाथी परहक चाह।

लखन बाजल-

“भाय साहैब, जाबे अहाँ चाह पीबैक मन सोल्होअना बनाएब तइसँ पहिने हमर चाह बनि जाएत। हमर भाथी कि कोनो मुइलहा चुल्हि छी जे साँझक संग मास-मास दिन उपासले रहैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“से की लखन?”

लखनकेँ जेना गुरुत्वक आभास भेलै तहिना अगधाइत बाजल-

“भाय साहैब, हमर भाथी कि कखनो सेराइए, जखन मन भेल तखन पजारि लेलौं।”

गप्पा-गपी होइते छल कि बिच्चेमे लखन ठाकुर चाह बना गिलास हाथमे धरा देलक। नव काज देखलौं तँए कर्ताकेँ (केनिहारकेँ) चाबस्सी देबाके छल मुदा मुँहमे चाह नेने बिना पहिने जँ चाबस्सी दऽ देबै आ चाह पीबै-जोकर नइ हएत तखन लखन

ठाकुरक चाबस्सी घुमि थोड़े जाएत, ओकरा तँ दऽ देने रहबै। जँ मंगबो करबै तँ ओ घुमौत किए, ओ तँ ओकरा करममे सटि गेल रहतै। तहूमे जखन सभ दिन बना कऽ अपनो पीबैए आ दोसराइतोकेँ पीऐबते अछि तखन जँ आनठाम केतौ बजबो करब तँ लोक थोड़े हमर बात सुनत..! हाँइ-हाँइ कऽ एक घोंट चाह पीलौं। नीक लागल। बजलौं- “लखन तोरा गैस चुल्हिक कोनो खगता नइ छह।”

लखन बाजल-

“हमरा की कोनो कुकुर कटने अछि जे अपन जारैन छोड़ि अनकर लेब। देखिते छिऐ जे सालमे तेते लकड़ीक काज करै छी जे भाथियो चलैए, भानसक चुल्हियो चलैए आ उगरा-पुगरा कातिकमे बेचियो लइ छी। खाली कनी-मनी पत्थर-कोयला कीनै छी।”

कातिकक आमदनी मनमे अबिते लखन ठाकुरकेँ चपचपाइत देखलिऐ। टोकारा दैत बजलौं- “कातिकेमे किए जारैन बेचै छह?”

लखन बाजल-

“भाय साहैब, जे सुतिहार लोक छैथ ओ अपन माघक घूरक ओरियान कऽ लइ छैथ आ जे गैसपर चलनिहार छैथ हुनकर तँ ट्रेनिंग कौलेजे ने माघ छी।”

चाह पीबिते लखन ठाकुर पानो खुऔलक, अपनो खेलक। दुनू गोरेक मन-मिजाज पिसाज भऽ मन-मस्तिष्क उत्कृष्ट भेल, उत्कृष्ट होइते एकरंगाह भऽ गेल। पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे अनेरे समय पानिमे बहि रहल अछि। बजलौं-

“लखन, आब अपन एक मिनट समयपर आबह।”

ले बलैया! लखन ठाकुर पैछला बात दिस नहि बढ़ि मुस्कियाइत बाजल- “भाय साहैब, अहूँ की सभ दिन अबै छी। भेल तँ साल-छह मासपर भेँट होइ छी, तखन एना धड़फड़ेने काज चलत।

माटि-तरिक...।”

लखन ठाकुरक बात सुनि अनउतरित भऽ गेलौं मुदा अपन माथक टेटर ओकरा माथमे साटैत कहलिऐ-

“लखन, तोहूँ अखन तक बासिये मुहेँ छह आ काजो समटाइये गेल, तँए तेना कऽ बाजह जे सभ काज एकेबेर सम्पन्न हुअ।”

एक तँ चाहक संग पानिक तैपर सँ पानसाए नम्बर देल पान लखनक मुँहमे फुला गेल छल तँए विचार सेहो फुल-फुलाइ-जोकर भाइये गेल छेलइ। बाजल- “भाय साहैब, दस-पाँट मिनट देरीकेँ हम देरी थोड़े बुझै छी, बिनु खेनौं दिन-राति खटि सकै छी।”

लखन ठाकुरक कर्मठ बात सुनि मनमे उठल जे जे आदमी भरि दिन लोहा पीटैए तेकरो जखन अभ्यास भेने भरि दिन किछु ने बुझि पड़ै छै तँ जरूर ओ कर्मसाध्य भेल। बजलौं-

“लखन, तोरे सन-सन लोकक खगता गाममे अछि। जँ तोरा सन-सन लोक गाममे ठाढ़ भऽ जाएत तँ जरूर गामक उद्धार हेबे करत।”

हमर बात सुनि लखनक मनमे कर्मतुष्टि जगल। कर्मतुष्टि जगिते बाजल-

“भाय साहैब, जइ समाजमे जन्म लेलौं, बच्चासँ सियान भेलौं तइ समाजक रीन जँ नइ चुकाएब तँ मुइला पछातियो दोखीक पिण्ड थोड़े छुटत। तहूमे तेहेन नकुल समांग सभ भेल जाइए जे भरि दिन टोना-मानीमे लगल रहैए, तैपर जँ टोकबै तँ खिसिया कऽ ओ सात पीढ़ीकेँ उकैट उद्धार कऽ देत।”

लखन ठाकुरक बात सुनि सोचलौं जे जेते विचारकेँ जत्तामे जातब तेते ओइमे झीक देब हएत आ जेते झीक पड़त तेते विचार पातर होइत नमड़ैत जाएत! तइसँ नीक जे किछु बजबे ने करब।

अपने तँ बजैत-बजैत लखन पाहिपर चलि औत। सएह भेल।

लखन ठाकुर बाजल- “भाय साहैब, फटेसर भाइक विषयमे पुछने छेलौं।”

फटेसर भाइक नाओं सुनिते अकचकाइत बजलौं- “हम ते बिसरिये गेल छेलौं। भने तूँ मोन पाड़लह।”

बाजल- “भाय साहैब, हम पसारी छी, दस दुआरी छी तँए विचारकेँ कनी दाबि कऽ बाजए पड़ैए। मुदा अखन दुइए गोरे छी तँए खोलि कऽ कहै छी।”

लखन ठाकुरक बात सुनि मनमे भेल जे जरूर असल बात बाजत। तँए बोलीक आवाजकेँ कम करैत बजलौं-

“लखन, अपने सभ गामक कर्ता-धर्ता भेलिऐ, जँ अपने सभ कोनो काजे आकि विचारेमे कलछपन करबै तँ ओते गामेक ने नोकसान हएत। लोक तँ बहुरंगी अछिए। समाजक लोक तेहेन कुकुरचालि चलैए जे अपन सामाजिक सम्बन्धकेँ कोठीक कान्हपर रखि आन समाजक सम्बन्धकेँ जीअबैत अपनाकेँ मारि रहल अछि।”

हमर बात जेना लखनकेँ मनमे गड़लै। बाजल-

“भाय साहैब, से की कोनो चोराएल-छिपाएल अछि। भोलबाकेँ देखिते छिऐ जे किसुनलालक भैयारी छी, मुदा सासुरक लाटे सार-बहिनोइ जकाँ हँसी-चौल करैए।”

बजैत-बजैत लखन गंभीर हुअ लगल। लखनक गंभीर होइत चेहरामे मलिनता आबए लगलै, जेना मिलनताक भाव जगलै। बुझि पड़ल जे सामाजिक सम्बन्धकेँ लखन सभसँ ऊपर मानैए। मुदा एहेन रूप समाजक आइये नहि बनल अछि, बहुत पहिनेसँ आबि रहल अछि तँए जेहेन रोग रहैए ओकर इलाजो जखन ओहने हएत तखने ने ओ छुटत। मुदा एहेन-एहेन रोग कोनो एकेटा थोड़े अछि जे

झटपटमे इलाजो कऽ लेब। बजलौं-

“फटेसर भायबला गप छुटि गेलह लखन।”

फटेसर भायबला गप छुटब सुनिते लखन ठाकुर रोमांचित भऽ गेल। देहक सुटकल रोआँ भुलैक उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। बोलीमे ओज सेहो आबि गेलइ। बाजल-

“फटेसर भाय, सामाजिक नहि असामाजिक विचारक लोक छैथ।”

लखनक बात सुनि मन ओहिना मुड़िया गेल जेना कोनो लत्तीक मुड़ी अपने संग सिरमे मुड़िया जाइए। मुड़िया ई गेल जे लखन सामाजिक आ असामाजिक विचारक चर्च केलक अछि। ओना, एक शब्दक अरथो जगह पेब-पेब बदैल जाइए, आ तेतबे नहि, लोक लोकक विचारो पेब–माने वैचारिक स्तरक हिसाबसँ सेहो–बदैल जाइए तँए अपन मन की बुझि रहल अछि आ लखनक मन की बुझि बाजल से तँ खुलासा भेला पछातिये बुझि सकै छी।

बजलौं-

“से की लखन?”

लखन बाजल-

“अहूँ अनाड़ी जकाँ बजै छी भाय साहैब। भरि दिन हम पसारमे बैसल-बैसल लोहो-लकड़ीक काज करै छी आ जे कियो काजे अबै छैथ हुनकासँ गपो-सप्प करिते छी।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ होइते हेतह। ऐमे के नइ कहतह।”

हमरा बातसँ लखनकेँ सह भेटल। समस्याक लग आबि सहैट कऽ बाजल- “भाय साहैब, अहाँकेँ तँ बुझले हएत जे चारिम दिन

फटेसर भाइक बेटी मनोहर संगे गामसँ पड़ा गेल।”

अपना नइ बुझल छल तँए बिच्चेमे बजलौं- “धरमागती कहै छिअ लखन, नइ बुझल अछि।”

हमर बात सुनिते लखनक मन मानि गेल जे भऽ सकैए। अनकर बात-ले आन किए झूठ बाजत। अपन हानि-लाभ बेरमे जे करैत हुअए मुदा जैठाम कोनो आमद-खर्च नइ छै तैठाम लोक अनेरे झूठ किए बाजत। बाजल-

“फटेसरक जे जेठ बेटी बेबी छै, ओ कौलेजमे पढ़ैए। भरिसक बी.ए. फाइनलक परीक्षा देत। बी.ए. केलाक पछाइत ते बिआहे हेतइ किने।”

जेना लखनक विचारक धारमे अपनो मन बहि गेल तहिना अनासुरती बजा गेल-

“हँ! से तँ हेबे करत किने।”

हमर सह पबिते–माने हँ-मे-हँ मिलौने–लखन सहत फेकैत बाजल-

“भाय साहैब, गामक लोक हमरा अखनो बिपटे बुझैए!”

बिच्चेमे बजा गेल-

“से किए बिपटा बुझै छह लखन?”

लखनक मनमे जेना वैचारिक चोट पड़लै तहिना हृदय पसीज गेलै, थल-थलाइत मनक हृदय दल-दला कऽ पानि-पानि भऽ गेलइ। पनियाएल विचारे बाजल-

“भाय साहैब दस साल पहिने मन चोभिया नाच–मजदूर-किसान–मे जोकरक पार्ट खेलै छेलौं। से तेते नाम पसरल जे किछ लोक बिपटा कहैये लगल। आगिक सोझमे छी, आब अपनाकेँ

समाजक ओहन बेकती बनए चाहै छी जे इमनदारीसँ लोहा-लकड़ीक काजसँ समाज सेवा करै छी। मुदा लोकक नजैरमे अखनो बिपटे छी तँए हमरा बातक माइने कम अछि।"

लखनक किछु बात मनमे गड़बो कएल आ किछु उखड़बो कएल। बजलौं-

"लखन तोहर देह ने साधल छह मुदा हम तँ अपनाकेँ कँचकूह बनौने छी, बुझह ते बकरी जकाँ मुँह नइ चलल तँ मने गड़बड़ए लगैए। तँए आब जँ रूकबह तँ खेनाइ सेहो लगि जेतह।"

ले बलैया! लखनक मनमे जेना धारक मोइन फुटि गेल होइ तहिना बाजल-

"भाय साहैब, अहाँकेँ घरवालीक सप्पत दइ छी, औझुका खेनाइ एतै खाइ।"

मजाकमे टोनैत बजलौं-

"अपन सप्पत जँ दइतह ते बिसवासो होइत जे खाइले जेबह तँ दुनू गोरे बाँटियो कऽ खा लेब। मुदा घरवालीक सप्पत केना मानबह?"

हमर बातसँ लखनकेँ जेना आरो सह भेटलै तहिना जौड़ बान्हि दोसर सहत फेकैत बाजल-

"भाय साहैब, जखन नाटकक स्टेजपर सँ उतैर ग्रीन रूममे जा दोसर खण्डक तैयारी-ले विचारै छेलौं तखन गामक ओहन लोककेँ टोबि कऽ टोबिया अपन पार्ट करै छेलौं तखन अपन मन गबाही दइते छल जे अखन हम वएह छी जेकर मन टोबिया कऽ टेबलक।"

अलंकारिक शैलीमे लखनकेँ बहैत देखि रोकैत बजलौं-

"लखन, तूँ मंच परक लोक रहलह, तँए ओते नमहर-चौड़गर

बात करैक अखन समय नइ अछि, जे बात शुरू केने छेलह तैठाम से गप चलाबह।”

गाछक छीपपर चढ़निहारकेँ उतरैमे भलेँ कम समय लगौ मुदा चढ़ैमे जहिना सावधानी लगलै तहिना तँ उतरैयोमे लगबे करत। मुदा तैयो नीक मुहेँ उतरैत-उतरैत लखन बाजल-

“एकटा पाँती भाय साहैब मोन पड़ि गेल। जखन स्टेजपर पहुँचिये गेलौं तखन सुनियेँ लिअ।”

व्यासजीकेँ जहिना गणेशजीक शर्त्त भेलैन तहिना शर्त्त दैत बजलौं-

“पाँती तखने सुनबह जखन नाटकक मंचसँ उतैर अपना मंचपर चलि आबह।”

चढ़ल मन लखनक रहबे करइ, बाजल-

“शर्त्त मंजूर अछि। मुदा एते सुना कऽ– ‘मन लगा मेरा यार फकीरीमे...।’ कबीर जोलाहासँ जुलाह जरूर भेला मुदा अपन प्राणक रक्षाक उपाय अपने जिनगी भरि केलैन।”

लखनक बहैत धारक धाराकेँ धरियबैत बजलौं-

“लखन तोरा सन-सन मनुक्खदेवा समाजमे भेल रहत ते कहियो ने कहियो, केतौ-ने-केतौ मोकर फोड़ैत मोनि फोड़िये देत।”

हमर बात सुनि लखनक मनमे जेना तुष्टि भेल तहिना संतुष्ट होइत बाजल-

“जखने लड़का-लड़की सियान भेल, तहूमे जखन बी.ए.क विद्यार्थी अछि। माइयो-बापकेँ एते तँ बुझए पड़तैन जे घरसँ बिनु विचारे निकैल गेल तइ पाछू किछु ऐतिहासिक कारण सेहो छइ। जिनगीक जे क्रम अछि ओइमे पढ़ला पछाइत बिआहेक सीढ़ी अबैए

जे परिवार बनैक सीढ़ी सहो छी।"

लखनक विचारक गंभीरता देखैत बिच्चेमे टोकैत बजलौं-

"लखन, भूखे भजन ने होई गोपाल। अखन ओ सभ छोड़ह। अखुनका की हाल छैन फटेसर भाइक?"

मुस्कियाइत लखन बाजल-

"भाय साहैब, फटेसर भाइक हाल तँ बेहाल भऽ गेल छैन!"

हाल-बेहालक माने लगबे ने कएल। बजलौं-

"से की?"

लखनक मन चढ़ले रहइ, बाजल-

"समाजमे निरलजपनोक सीमा होइत अछि किने, जेकरा ओ सभ–माने फटेसर भाय सभ–उठा कऽ पीब गेल छैथ।"

लखन गंभीरसँ गंभीरतम दिस आगू बढ़ल जाए, आ अपने पाछू-पाछू वौआइत रही। बजलौं-

"से की लखन?"

लखन बाजल-

"जहिना फटेसर भाइक परिवारमे भेलैन तहिना केतेको घटना समाजमे भऽ चुकल अछि। ओही घटनाक बीच फटेसर भाइक विचारकेँ समाज कबुललक। जइसँ फटेसर भाइ समाजक मंचपर सही बजनिहारक रूपमे एला, केतेकोकेँ अन्तर्जातीय विवाहमे अगुआ कऽ भागो लेला, मुदा आइ जखन अपन बेटी एकटा गरीबक बेटाक संग चलि गेलैन तखन अपन सम्पैतकेँ बाजी बनबै छैथ..!"

लखनक बातक अर्थ नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छेलौं मुदा अधो-छिधा तँ बुझए चाहिते रही, बजलौं-

"से की?"

लखन बाजल- "भाय साहैब, अखन तँ झँपले-तोपल कहलौं हेन। एकरा चित्र बनबैक स्क्रैच बुझियौ। मुदा समय की कहि रहल अछि, से तँ सभकेँ बुझए ने पड़तै।"

बजलौं-

"छोड़ह अपन लटारम। अखन जाइ छिअ।"

लखन बाजल-

"भाय साहैब, अपनो मन उबियाइत रहैए जे अहाँसँ भेँट-घाँट करी। मुदा तेहेन मायामे ओझरा गेल छी जे जेना-जेना घरवाली नचबैए, तेना-तेना भरि दिन नचैत रहै छी। खाएर छोड़ू। अही चोटे फटेसर भाय मृत्युशैया पकैड़ घरमे कुहैर रहल छैथ। तँए एहेन पापीकेँ भेटोँ करब पापे बुझू।"

बजलौं-

"सएह..!"



शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

खेतक बँटबारा

मई मासक आगमन होइते ऑफिसो आ स्कूलो-कौलेज भिनसुरका भऽ गेल। कचहरिया लोक बिशेसर काकाकेँ एस.डी.ओ. साहैब मई दिवस मनेबाक हकार देलकैन। बिशेसर काकाकेँ अपन रूटिंग छैन। भिनसुरका केहनो काज रहल तैयो चानिपर सँ नइ नहा हाथ-पएर-मुँह-कान धोइये लइ छैथ तैसंग बेसीसँ बेसी दुनू भीजल हाथे माथ पोछि सेहो लइ छैथ। तहिना जेते कालक काज रहै छैन तेते कालक अपन भार अपने कन्हापर रखि चलै छैथ।

छह बजे बिशेसर काकाकेँ अनुमण्डल परिसरमे उपस्थित हएब छैन। मुदा अपन जिनगीक ओते क्रिया-कर्म केलाक पछाइते ने निकलता जेकर समय बीचमे पड़ै छैन। क्रियो-कर्मक तँ अपन रूप अछि, तँए लोक किछु काजकेँ धकेल काल्हि-ले रखि लइए आ किछुकेँ नियमबद्ध वर्तमानमे करैक रूटिंगमे अपनाकेँ बन्हैत आगू बढ़ैए। तँए सबेरगरे बिशेसर काका अपन तैयारीमे लागल छला। तही बीचमे रवि भाय पहुँचलैन।

रवि भायकेँ देखिते बिशेसर कक्काक मनमे ठहकलैन- काजमे काज ठाढ़ भऽ रहल अछि! मुदा दरबज्जापर आएल प्रीतकेँ बेप्रीत केने जाइयो देब तँ मनहानि हेबे करत। केतौ-ने-केतौ अपनो दोखी बनबे करब। तँए समयकेँ देखैत अपन अँटाबेस करबे ने नीक हएत। यएह सोचि बिशेसर काका कलपर हाथो-पएर धोइ छला आ रवि भायकेँ पुछियो देलखिन- "भोरे-भोर रवि?"

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भायकेँ बुकौर लगि गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"काका, हम गामसँ उजैर जाएब?"

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मनमे ठनका जकाँ ठहकलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"बौआ, अखन तँ हम दोसर ठामक तैयारीमे छी तँए समैयक अभाव अछि, मुदा उजरैक कारण की अछि से कनी कहि दएह।"

ओना, गामक भनकसँ बिशेसर काकाकेँ बहुत किछु जानकारी भऽ गेल छेलैन। अनेको धारामे गाम बहि रहल अछि आ बेकता-बेकती सेहो बहिते अछि। मुदा मोटा-मोटी तीनकेँ तँ मानए पड़त। कोनो घटनाक दुनू पक्ष आ तेसर निष्पक्ष, जेकरा घटनासँ कोनो सम्बन्ध नहि रहैए, तँए समाजक बीच बेकतीगत समस्या एतेक असान अछि जे ओ मात्र दू प्रतिशत अछि, अनठानबे प्रतिशत निष्पक्षे लोक छैथ मुदा लाजिमी तँ ईहो अछिए जे निष्पक्ष केना पक्ष बनि जाइ छैथ।

बिशेसर कक्काक प्रश्न सुनि रवि भाय समाजक ओइ धारमे डुमए लगला जइमे अनेको डूमा भऽ चुकल अछि। ओना, डूमा पोखैर सेहो होइए जेकरासँ लोक डरैए मुदा ओ तँ समाजक सम्पैत छी ओकरा तँ अपने जकाँ बना ने चलब..!

अपन आँखिक बहैत यमुना धारमे रवि भाइक विचार भँसिया रहल छेलैन। मुदा जहाज पकड़ैत काकोड़क भाँज बिशेसर काकाकेँ मनमे चढ़बे ने केलैन। बिनु बुझल प्रश्नक जेहने उत्तर हेबा चाही तेहने उत्तर दैत बिशेसर काका रवि भायकेँ कहलखिन-

"बौआ, गामसँ केकरो उजरब आ केकरो उजारब दुनू दू भेल, जे असथिरसँ विचार करैक विषय छी तँए औगुतेने तँ काज नहियेँ

चलतह। अबै छी तखन निचेनसँ आगूक सभ गप करब।”

रवि भाय बजला- “काका, बोन राखए बाघ आ बाघ राखए बोन।”

मुस्की दैत बिशेसर काका बजला-

“बड़ दूरक बात बजलह रवि, मुदा बिलाइ जँ ऐ आशासँ बोन लगबै जे बाघ बनब, तखन दूध आ दूधक छालही, छालही आ छालहीक बनल मक्खन, मक्खन आ मक्खनसँ बनल ‘घी’बला लड्डू के खाएत?”

बिशेसर कक्काक बात रवि भाय कानसँ सुनलैन जरूर मुदा बेथाएल मन गड़ए नइ देलकैन। ओना, बिशेसर काकामे एते बिसवास रवि भायकेँ छैन्हे जे कोनो घटनाक वस्तु-स्थितिक विचार करैत अपन पक्ष रखै छैथ...।

कलपर सँ उतरैत बिशेसर काका लोटामे पानि नेने आगू बढ़ैत रवि भायकेँ कहलखिन-

“अखन तूँ जाह, साँझमे निचेनसँ सभ गप करब।”

ओना, रवि भाय विदा भऽ गेला मुदा जहलक डन्टाबेड़ी जकाँ दुनू पएर छनाए लगलैन। बिशेसर कक्काक मनमे सेहो प्रश्नकेँ जेना घर करक चाही से नहि केलकैन। तेकर कारण आगूमे आएल काज छेलैन।

साइकिल पकैड़ बिशेसर काका एस.डी.ओ. साहैबक हकार पूरए विदा भेला। ओना, बिशेसर काकाकेँ मोटर साइकिल सेहो छैन्हे। मुदा अपन विचार अपना जिनगीमे उतारि चलै छैथ तँए सेनरेले साइकिल सेहो रखने छैथ। स्पष्ट समझ छैन जे तीन किलो मीटरक बीच मोटर साइकिलपर नहि चढ़ब, चढ़ब एके स्थितिमे जखन साइकिल चलै जोकर परिस्थिति नहि रहत।

साइकिलपर चढ़िते बिशेसर कक्काक मन रवि भायपर पड़लैन। मुदा 'मजदूर दिवस'क हकार पूरए जाइ छी तँए रस्ताक समय ओकर ने भेल माने ओइ कार्यक्रमक। तँए जाबे तक पहुँचब तैबीच बुझै-विचारैक समय अछि। मजदूर दिवस छी, केना दिवसकेँ पकैड़ आगूक समैयक संग चलब...। आइक जे समय अछि ओ केतए अछि आ आइक जिनगी अछि से केहेन केकर अछि ई मूल प्रश्न भेल। वैचारिक दौरमे तँ सबहक मुहसँ आवाज उठिते अछि- शिक्षा, संगठन आ संघर्ष। मुदा संघर्ष बेकतीगत आकि सामुहिक माने सामाजिक? मुदा तइसँ पाछूए शिक्षामे तेहेन मुसकल लागल अछि जे जेरक-जेर इंजीनियर बनि ठाढ़ होइए आ तकनीककेँ आगू बढ़ने ओ बेकार भऽ रहल अछि। तेतबे किए, वृद्धजन अपन जिनगीकेँ किए ने उजागर कऽ रहला अछि जे बेटा-पुतोहुकेँ अमेरिका गेने केहेन सुख भऽ रहल छैन? तीन बर्खक बच्चा माए-बापसँ दूर हटि दोसराक विचारधारामे बहैए–माने नव-नव शिक्षण संस्थानमे, जैठाम माता-पिताक संग एहेन रूप बनल जा रहल अछि–तैठाम 'अतिथि देवो भव:' बकबासक अतिरिक्त की बनि ठाढ़ अछि..?

नीक कार्यक्रमक आयोजन देखि बिशेसर कक्काक मन सेहो पुष्ट भेलैन। पुष्ट होइते मुहसँ फुटलैन- "केना शिकांगोमे अपन जिनगीक लेल प्राण न्योछावर प्रणेताजन केलैन। आइ ओही उपलक्ष्यमे ने सभ एकठाम भेलौं। चारि घन्टाक कार्यक्रम ऊपरा-ऊपरी रहल...।"

पानक विदाइ पबिते बिशेसर कक्काक मनमे रवि भाइक प्रश्न खसलैन। नीक कार्यक्रमसँ घुमल मन रहबे करैन, समस्यापर नीक जकाँ नजैर खिड़लैन। नजैर खिड़िते मनमे उठलैन- जेहेन समस्यामे रवि फँसल अछि, ओ कोनो मौसमी रोग नहि, बरखाउ छिऐ। एहेन-

एहेन घटना गाममे पचासो भेल अछि आ होइतो रहैए। जेना भैयारीक बँटवारामे, माने दू भाँइ-तीन भाँइक बीच एकटा खेत रहल, बराबर-बराबरक बीच आड़ि पड़ल। अपन-अपन हिस्सा कायम भेल। ओना, समय पेब खेत बदैलतो अछि। खेत बदलैक माने भेल खेतक मूल्य बदलब। मानि लिअ दू भाँइक बीच खेत अछि, एक भाँइक जमीन दिस बगलक खेतबला गाछ-बाँस लगा खेतकेँ अछाह बना देत जइसँ उपज प्रभावित हएत। जखने उपजा कम-बेसी हएत तखने ने ओकर मूल्य कम-बेसी भेल। तहिना धार-धूरक इलाकामे केतौ मोनि फोरि दइ छै आ केकरो गहींर खेतकेँ ऊँच बना घराड़ी बना दइ छै, तहूसँ खेतक मूल्यमे उछालो आ घटालो तँ अबिते अछि। मुदा एहनो तँ ऐछे जे अपन हिस्साकेँ अपन भाग्य बुझि अपन विचारपर लोक ठाढ़ रहैए। जे भैयारीक बीच कोनो बाहरी आक्रमणक मुँह नइ खुजए दइए। मुदा एहेन स्थितिमे समाज जँ चुप्पी लधने रहत सेहो नीक नहियेँ भेल।

घरपर पहुँचला पछाइतो बिशेसर कक्काक नजैर घटनाक रूपकेँ फरिछाइत नहि देखि पेलकैन। ओना, बारह बजेसँ ऊपर दिन पहुँच गेल छल जइसँ कक्काक मन तबैध गेल छेलैन। तँए मन मानि लेलकैन जे तबधलमे एहेन समस्यापर विचार करब जल्दवाजी हएत। मुदा जहिना पोखैर आकि कोनो जलपात्रमे कम्पन्न उठैतकाल रसे-रसे उठैए तहिना बैसैतकाल–माने शान्त होइकाल–सेहो रसे-रसे बैसैत अछि। तँए नीक जकाँ बिशेसर कक्काक मन शान्तसँ बैसल नहि छेलैन, रसे-रसे बैस रहल छेलैन। मुदा तइ बिच्चेमे सौन मासक पंचमी मनमे उपकलैन। उपैकते मन नचलैन जे पंचमीक साँझमे मूसक माटि आ धानक लाबाक संग विषहाराक मंत्र-जप होइए। जइसँ सबहक समधानल बाट खुजै छइ। मुदा एक संग सबहक (विषधक) मंत्र-जाप भेने खुदरा-खानि–माने एक्की-दुक्की–छुटियो

जाइते अछि। मुदा जे छुटि जाइए से विषैला ऐछे नहि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अन्तो-अन्त बिशेसर कक्काक मन ओइ सिमान तक नहियेँ पहुँच सकलैन जैठाम खुदरा-खानिक कारोबार अछि।

मेघौने मने बिशेसर काका नहा कऽ खेलैन। खा कऽ ओछाइनपर पहुँचला। एक तँ साइकिलक काटल रस्ता, झमारल देह आ तैपर अपन अराम करैक समय, तँए रवि भाइक समस्या बिशेसर कक्काक मनमे रसे-रसे पतराए लगलैन। मुदा सिरमापर माथ रखिते रवि भाइक समस्या तर-ऊपर भऽ गेलैन। तर-ऊपर होइते मन चनकलैन। ताबे तक चित्त शान्त भऽ गेल छेलैन। शान्त चीते विचार केलाह जे बेकतीगत समस्या सामाजिक समस्याक अंगो छी आ बेअंगो छी। बेअंगक माने भेल एक्के समस्याक भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप...।

'भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप'पर पहुँचते बिशेसर कक्काक मन कबूल लेलकैन जे सभ समस्याक अपन-अपन मूल अछि, तँए मूल पकड़ैले ओकर जड़िमे जाएब जरूरी अछि। तैबीच नीनसँ आँखि बन्न भऽ गेलैन।

बेरुका उखड़ाहाक अन्तिम पहर, मई दिवसक अवसान। आइये ने लोक अपन जिनगीक लेल संकल्पित हएत..!

बिशेसर काका अपन दैनंदिनक रूटिंगकेँ छोड़ि अपन संकल्प दिस बढ़ला। बढ़िते रवि भाइक समस्या मनकेँ छानि लेलकैन।

मनमे छान लगिते बिशेसर काका मने-मन अपनाकेँ संकल्पित केलैन। संकल्प ई जे ने केकरो एकमुट्ठी खुऔलासँ ओकर कल्याण हेतै आ ने कोट-कचहरीक चक्कर लगौलासँ, हेतै तखन जखन समाज अपन दायित्व बुझत जे गामक जे समस्या अछि ओ समाजक पहिल समस्या भेल, तँए ओइ पाछू–माने ओकर समाधान

करैक पाछू– अपनाकेँ उन्मुख करी। तैबीच सुजीता काकी लोटामे पानि आ गिलास नेने बिशेसर काका लग पहुँचली। लोटा-गिलास चौकीपर रखि चाह बनबए आँगन दिस मुड़ली कि पाछू दिससँ रस्तापर अबैत रवि भायकेँ देखली। देखिते ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ रवि भायकेँ निहारए लगली। उड़ल-उड़ल चेहराक रूप, जेना मृत्युक वाणसँ बेधाएल होथि तहिना बुझि पड़लैन।

लगमे अबिते रवि भायकेँ सुजीता काकी कहलखिन-

"बैसू, अपनो भरि दिनक तबाहीए-मे रहला, मुदा तँए की। पहिने पानि पीबू। चाह नेने अबै छी, औगतेने कोनो काज थोड़े होइ छइ।"

ओना, सुजीता काकीकेँ रवि भाइक समस्या ने बुझले छेलैन आ ने सुनले, किएक तँ बिशेसर काका समयाभावमे नहि बाजि पेने छला आ दोसर-तेसरपर सुजीता काकीकेँ ओहन बिसवासो नहियेँ छैन जे कान दऽ किछु अकाननौं रहितैथ।

मुदा पतिपर अटूट बिसवास छैन्हे तँए आश्वासनक रूपमे बजली।

ओना, बिशेसर काका सेहो दुनू गोरेक बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। आँगनसँ सुजीता काकी दुनू गोरे–माने बिशेसरो काका आ रवियो भाय-ले–चाह नेने एली।

पतिकेँ हाथमे चाह पकड़ा सुजीता काकी मुँह दिस देखए लगली। ओना, नजैर रवि भाइक पीड़ापर रहैन। मुदा बिशेसर काकाकेँ भेलैन जे दोसरोक हाथमे चाह देली अछि तँए चाहक नीक-अधलाक निर्णय लिअ चाहि रहली अछि। बिशेसर काका हाँइ-हाँइ कऽ दू घोंट चाह तँ पीब लेलैन मुदा बजला किछु ने।

चाह पीब पान खा बिशेसर काका रवि भायकेँ पुछलखिन-

"रवि, तखन औगताएल छेलौं तँए नीक जकाँ गप-सप्प करैक समय नइ छल। अखन सविस्तर बात कहह।"

पतिक बात सुनि सुजीता काकी सेहो चौकीपर बैसली। रवि भाइक मन उड़ल-उड़ल सन रहबे करैन तँए बिशेसर कक्काक प्रश्नक जइ क्रममे उत्तर हेबा चाही तइ क्रममे नहि दए क्रमभंग रूपमे बजला।

"काका, खेत-पथार कोनो चीज छी, मुदा मनक जे संकल्प छल ओ टुटि रहल अछि।"

ओना, रवि भाइक अपन समस्यासँ सम्बन्धिते विचार छेलैन मुदा सुजीता काकी नीक जकाँ नइ बुझि पेली, तँए डकहर जकाँ आँखियो आ लोलो पति दिस बढ़ौने रहली।

'मनक संकल्पकेँ टुटब' सुनि बिशेसर कक्काक मन थरथराए लगलैन। वकार बन्न भऽ गेलैन किएक तँ मनमे उठि गेलैन- संकल्प तँ ओ छी जे संकल्पितकेँ भंग-भंग मृत्युक मरनोक सोझा पार करैए!

चुपा-चुपी दरबज्जापर पसैर गेल। ने कियो बजनिहार आ ने कियो सुननिहार। मुदा किछुकालक पछाइत चुप्पी तोड़ैत बिशेसर काका बजला- "रवि, एना बात नइ बुझब। जड़िसँ सभ बात कहह।"

बिशेसर कक्काक विचारसँ रवि भाइक मन थलथलाए लगलैन। थलथलाइत मन दलदलाइत रूप पकैड़ फुटल- "काका, दू भाँइक भैयारी अछि से तँ बुझले अछि?"

समर्थन करैत बिशेसर काका बजला- "ऐमे के नइ कहतह।"

रवि भाय बजला- "आठ बीघा जमीन दुनू भाँइक बीच अछि।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला- "पहिने अपन संकल्प कहह।

खेत-पथार कोन चीज छी जे तइले परान गमेबह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भाँइक मनमे जेना स्वाति नक्षत्रक पहिल बून खसल होनि तहिना मीठपन जगलैन। बजला-

“काका, सभ दिन अहाँ सबहक संग रहैत आएल छी, अहाँमे बेसी कलेवर अछि तँए बेसी संकल्प अछि मुदा हम ओहन नइ छी तँए कनी कम अछि।”

अपन संगीक तुलित विचार सुनि बिशेसर कक्काक मनमे उठलैन जे रविक चित्त तँ तखन ने बुझब जखन प्रश्नक पाछू समय कम आ उत्तर पबै पाछू बेसी विचार करब। मुदा ऐठाम तँ रवि प्रश्नक जड़ि दिस बढ़िये ने रहल अछि। बजला-

“रवि, पहिने संकल्प बाजह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन गवाही देलकैन जे भरिसक अपनापनमे पुछि रहला अछि...।

रवि भाय बजला- “काका, जहिये अहाँक संगतमे एलौं तहिये मनमे रोपि लेलौं जे दोसराक पमौजी नइ करब, अपन स्वतंत्र जीवन धारण करब।”

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर कक्काक मन अर्पणसँ तर्पण होइत पर्पणक सिमानपर पहुँच गेलैन। जइसँ मनक मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“रवि, एहेन विचार की तोरेटा मनमे जगै छह आकि सबहक मनमे जगैए। एहनो-एहनो जगता-जोर पुरुख सभ छैथ जे ने मर्त्यलोकमे माने जीबैतमे केकरो एक पाइ धाड़ै छथिन आ ने स्वर्ग गेला पछातिये केकरो मुहेँ सुनै छैथ जे बैंकक बँकियौता अहाँक ऊपरमे एते अछि। जखने मृत्युलोकमे केकरो मुहेँ अधला नइ सुनब तखने ने स्वर्गोक स्वतंत्रता भेल, नहि तँ ओहो गुलामीए भेल किने।”

ओना, रवि भाइक मन एकाग्र भऽ गेल छेलैन, तँए बिशेसर कक्काक विचार ओइ रूपेँ नइ लऽ अपन संकल्प दिस बढ़ए लगलैन। बढ़िते बजला-

"काका, अहाँ तँ देखिते छी छोट भाए रहितो प्रकाश दिल्लीमे अपन मकान बना सपरिवार रहैए। धिया-पुतार्कँ नीक स्कूलमे, माने पैसाबला स्कूलमे पढ़बैए आ अपने ऑफिसमे बाबू बनि जीबैए।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"सभ बात ते नहि बुझल अछि, मुदा किछु-किछु नइ बुझल अछि सेहो नहियेँ अछि, तँए दिल्लीबला बात छोड़ह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाय बजला-

"काका, जहिना कोनो गाछक सिर चारू भाग चतरल रहैए तहिना ने जिनगियोक लत्ती अछि, भलेँ मनुक्खक सिर एक-सिरे किए ने होइ।"

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर काका ठमकला। चारू दिस नजैर घुमबैत बजला-

"बौआ रवि, जे आदमी गामसँ बाहर जा बसि गेल ओइ दिस समय नइ लगबए चाही छी। समय लगबए चाहै छी ओइ दिस जे गाममे रहि संगे-संगे समाज बनि जीब रहल छैथ तँए अप्पन बात बाजह।"

रवि-

"काका, जे काज दुनू भाँइसँ सम्बन्धित अछि ओ तँ बजबे ने करब।"

गौर करैत बिशेसर काका कहलखिन-

"हँ, ओ तँ अनिवार्य अछि। मुदा जेतबे समस्यासँ सम्बन्धित

अछि, तेतबे बाजह।”

रवि भाय बजला- “काका, एक संग दूटा समस्या उठि गेल अछि!”

रविक मुहसँ ‘एक संग दूटा समस्या’ सुनि बिशेसर काका अकचकेला। अकचकेला ई जे जँ कोनो रोगीकेँ ओहन दूटा रोग एकसंग पकैड़ लइ, जेकर दवाइ एक दोसराक प्रतिकूल होइ, तखन तँ मरबे करत किने..! फेर मनमे उठलैन- मृत्यु तँ अनिवार्य अछिए, चाहे ओ विचारक होइ आकि कोनो किरिये-कलापक, मुदा दुनूक तँ अपन-अपन गतिधारा अछिए, ओ तँ जीबिते रहैए किने..? मनमे अबिते बिशेसर काका बजला-

“रवि, दूटा समस्या होइ कि दसटा, मुदा सभ समस्याक अपन-अपन ओझरीक सूत होइए। जेकरा सूत्रधार सेरिया कऽ पकैड़ सुतियबैत ओइ समस्याक समाधान करैए, तँए चिन्ता ओतबे करक चाही जेते भेल घावकेँ छुटैक घड़ी होइ।”

बिशेसर कक्काक विचार सुनि रवि भाइक मनमे भरोसक अंकुर जगलैन। सब्रकेँ अँकुरिते बजला-

“काका, दुनू समस्याकेँ एकेबेर कहि दइ छी। पछाइत जेना जे विचार करब से विचारि लेब।”

रवि भाइक विचार बिशेसर काकाकेँ सेहो नीक लगलैन। पत्नी दिस नजैर उठबैत बजला-

“जँ हल्लुको-फल्लुक चाह कनियोँ बीचमे पीआ दइतौं तँ मनो हलुकाएल रहैत आ...।”

‘खग जानए खगक बोल।’ पतिक विचार सुनिते जी-हुजुरी करैत सुजीता काकी बजली- “बेस कहलौं! बीचमे रवि सेहो अपन विचारक मुँह-मिलानी कऽ लेत।”

सुजीता काकी चाह बनबए गेली। बिशेसर काका बजला-

“रवि, जहिना लोक तहिना परिवार आ तहिना गामो-समाज तेना ओझरा गेल अछि जे रस्ता भेटब कठिन भऽ गेल छइ। मनुक्ख तँ चलत रस्ते धेने, जे भेटबे कठिन भऽ गेल छइ। तखन मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, बुधि-विचार-विवेकक मालिक। जखन दुनियाँमे जीबै छी तखन कोनो-ने-कोनो देने अपनो विचारक रस्ता ताकिये लेब। तँए चिन्तनीय कोनो बात नहि।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रविक मनमे सेहो भरोसक उदय भेल। तैबीच सुजीता काकी चाह नेने पहुँचली।

बिशेसर काका मुँहमे चाहक गिलास भीरेबे केलैन कि बिच्चेमे सुजीता काकी टोनि देलखिन-

“बड़ आशासँ रवि दरबज्जापर पहुँचल अछि।”

सुजीता काकीक बात सुनि रवि भाइक मनक क्लेश अदहा-अदही कमि गेलैन, मुदा बिशेसर कक्काक मनक समस्या दोबरा गेलैन। दोबराइते पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहाँ की आने पुरुख जकाँ हमरा बुझै छी। अनका जकाँ हम थोड़े किछु मनमे रखि किछु विचार मुहसँ बहार करै छी। हम एकबोलिया छी, ने किछु मनमे रखि बजै छी आ ने पेटमे रखै छी। जे रहैए ओ उगैल दइ छिऐ। हँ, एहेन भऽ सकैए जे किछु समाधान तत्काल भऽ जाइए आ किछुकेँ समैयक प्रतीक्षा करए पड़ै छइ। मुदा जखने ओकर मुहूर्त औत तखने ओकर मुँह जगतै जे समाधानक उचित समय भेल।”

एके विचारमे चाहो सठि गेल। मुदा एते सतर्की सुजीता काकी रखबे केली जे बिच्चेमे पानो लगा नेने छेली।

मुँहमे पान दइते रवि भाइक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते

मुहसँ फुटलैन-

"काका, दुनू समस्या एक्के बेर कहि दइ छी। अपना ढंगे अहाँ अपन विचार करब।"

रवि भाइक गप सुनि बिशेसर कक्काक नजैर देशक पुबरिया इलाका–त्रिपुरा-अरुणाचल–क भोजपर पहुँच गेलैन। जैठामक भोजमे सभसँ नीक व्यंजन जे रहल ओ सभसँ पहिने परसल जाइए। मुदा ओइमे ओकर सीमा बनल अछि, पछाइत जेना-जेना असीमित व्यंजन दिस भोज बढ़ैए तेना-तेना सीमा बदलैत पर्याप्तमे पहुँच जाइए। अपना सभ देशक उत्तरमे छी, ऐठामक भोजमे जे जेतेक नीक व्यंजन रहैए ओ तेतेक पछुआइत बँटाइए...। मुदा दच्छिनभर केरलक एकटा भोजमे सेहो पड़ि गेलौं। ओइठाम सौंसे देशक भोज्य–विन्यास शुरूहेमे परैस देलक। अपन विन्यास कनी कम, सुआदै-ले परसलक आ आन-आन, खेनिहारक हिसाबे, कमी-मनी बेसियबैत गेल। तइसँ देखै छी जे चालि-प्रकृतिमे सेहो अन्तर अछिए। ओहो एक रंग नहियेँ अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचैले (माने जैठाम जा रहल छी) जखन कोस-दू कोस आगू बढ़ै छी तखन मनमे कनी खुशी, माने जेते टपि गेलौं, आ कनी बेसी दुख-तकलीफ तँ बुझिये पड़ैए। बुझैक कारण पैछला काजक अनुभव अछि...।

विचारक समतल सीमापर पहुँचते बिशेसर काका पत्नीकेँ कहलखिन- "अहीं रविक माथक ढील हेरू। हम चुपचाप देखैत-सुनैत रहब। जँ केतौ बजैक खगता बुझि पड़त तँ से बाजि देब।"

पतिक विचारकेँ सुजीता काकी मने-मन ताकिये-हेरि रहल छेली कि बिच्चेमे रवि भाय घरक लक्ष्मीकेँ गुण-गान करैत बजला-

"काकी जे कहि देती से मानि लेब। भलेँ ओ कनी-मनी घाउए किए ने करए।"

सुजीता काकीकेँ बीचमे देखैत बिशेसर काका मने-मन खुशी भेला जे आब समस्या हल्लुक होइक रस्ता धेलक..!

समर्थन दैत बिशेसर काका बजला- “रविक मन जइसँ खुशी होइ सएह विचार हमरो अछि।”

रवि भाय सुजीता काकी दिस घुमैत बजला- “काकी, गामक सम्पैत ई डकुबा सभ लऽ जा रहल अछि, से समाज होइक नाते देखल जाएत?”

रवि भाइक बात बिशेसरो काका नीक जकाँ नइ बुझि पेला मुदा मनमे ई रहबे करैन जे असल श्रोता तँ पत्नी छैथ। जँ हुनकर बकार बन्न हेतैन तँ पाछूसँ सह देबैन...।

सुजीता काकीक मन चटपटाए लगलैन जे रविकेँ केहेन बोल कहबै जइसँ भरोस जगतै। मुदा नीक बोल तँ तखने ने मुहसँ निकलत जखन नीक जकाँ ओ बात बुझने रहब। से तँ सुजीता काकी बुझबे ने केली। तँए कोइली जकाँ नीक बोल तँ नहि निकालि सकली मुदा मन कड़ुआ जरूर गेल छेलैन।

ओना, पिपासु सुजीता काकीकेँ देखि बिशेसर कक्काक आँखिमे पानि उतैर एलैन। बजला-

“एना मुँह बन्न केने हएत, जे नइ बुझै छी आकि नइ बुझलौं ओ दोहरा कऽ रविकेँ सुना देल करियौ, जइसँ विचारमे समता औत। विचारमे समता अबिते समानता औत। जे समस्याक समधानल बाटक वाण हएत।”

पतिक विचारकेँ अपन माथपर सँ रविक माथपर फेकैत सुजीता काकी बजली-

“सभ बात ते रवि बुझबे केलह। फरिछा-फरिछा कऽ जेते बजबह ओते फरिछाइत-फरिछाइत पोखैरक घाट परक पानि बनि

जेबह।”

सुजीता काकीक बात सुनिते रवि भाय भवसागरमे भँसिया गेला। मनमे उठलैन- दुनियाँक झेलक झीलमे झल-झलाइत झिलहोरि खेलब अछि। भँसियाइत बजला- “काकी, जखन बैसैक जगहक संग चाहो-पान भेटल तखन आरो की चाही।”

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर काका अपन विचारक सीमा टुटैत देखि बजला-

“रवि, अनेरे दुनियाँमे वौएने काज थोड़े चलतह, अपन जिनगी अपना हाथमे रखि चलैक बाट पकड़ह।”

अपन विचारसँ पाछू हटैत रवि भाय बजला- “काका, लोक तँ लोकेक बीच ने हँसि-कानि जिनगी बितबैत चलैए।”

बिशेसर काका रविक भँसियाइत मनकेँ पकड़ैले एकटा खिस्सा उठबैत बजला-

“रब्बी, एकटा रहैथ संकल्प मुनि। हुनकर मन जखन असथिर रहैन तखन सबहक सभ बात सुनैथ आ जखन बगैद जानि तखन अपने बात बजबो करैथ आ अपने बुझबो करैथ। तँए जेतेक जोरसँ बजै छला तेतेक सक्कत अपनाकेँ बुझितो छला।”

बिशेसर कक्काक खिस्सामे रवि भाय तेहेन मस्त भऽ गेला जे रसे-रसे अपनोमे मस्ती उपकए लगलैन...।

रवि भाइक मस्तपन देखि बिशेसर कक्काक मन मानि गेलैन जे जहिना कोनो ओझा-गुणी भुतलग्गूकेँ झोंटा पकैड़ बकबए लगैए, माने जे-जे कहबैक रहलै से-से कहबए लगैए तहिना बुझि पड़लैन। मुदा तइले तँ भूतक संग कनी दौड़ए पड़िते छइ। पाछू मुहेँ रवि भायकेँ दौड़बैत बजला- “रवि, दुनियाँमे किछु अछि! अछि एतबे जे जे जेते दौग कऽ चलत ओ ओते दूर जाएत। आ जेकरा ऊपर माया-

जालक मोटरी जेते भारी रहतै ओ ओते इचना माछ जकाँ समुद्रक कातेमे घास-पातमे ओझरा समुद्र दिस टकटकी लगौने रहत।”

बिशेसर कक्काक वाणीमे की जादू छेलैन, असलमे से तँ अपने बुझै छला मुदा दुनू श्रोता–रवि भाय आ सुजीता काकी–अपने-अपने तालमे बेताल भऽ गेली। सुजीता काकीकेँ ओंघीक आगमन भेलैन जइसँ मन हफुआए लगलैन, मुदा रवि भाय मगन भऽ जेना गगनमे विचरण करए लगला। थोड़ेकालक पछाइत एकाएक गनगनाइत रवि भाय बजला-

“काका, अपना संगे जे दूटा काज गुजैर रहल अछि, से पहिने कहि दइ छी।”

रवि भाइक मधुर वाण सुनि बिशेसर काका बुझि गेला जे रोटी बेलैकाल जेतेक तेल आकि घीक चपाड़ा देबै तेतेक असानीसँ रोटी बेलाएत। ओना, बिनु घी वा तेलक बनलकेँ रोटी मानल जाइए भलेँ दलि-पुरी आकि कच-पुरीसँ माने कचौरीसँ ओकर पतरपनो आ ओजनो कम किए ने हौउ...।

बजला-

“शुभ काजमे जेते बिलंब करब ओते ओ अशुभे ने भेल, तँए जेतेकाल मुँहमे ताला लगौने रहबह तेतेकाल लोक धकिऐबैत रहतह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन आरो जल-जलाए कऽ थल-थलाए लगलैन। थलथलाइत रवि भाय बजला-

“काका, अपनो संग आ गामोक लोककेँ देखै छिऐ जे भैयारी तक खानदानी सम्पैतकेँ गामसँ बेच-बेच लोक दिल्ली-बम्बै-कलकत्ता-बंगलौर जा बसि रहल अछि।”

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला- “बेस बात कहलह! आ

दोसर?”

रवि भाय बजला-

“काका, की कहब। दुनू भाँइक बीच खेतक बँटवारा भऽ गेल। एकटा बान्हकातमे जे कोला अछि ओइमे दुनू भाँइक जमीनक बीच अधा-अधीपर आड़ि पड़ि गेल!”

बिच्चमे बिशेसर काका टोनलैन-

“अधा-अधीक माने बीचो-बीच किने?”

“हँ!”

रविक भाइक ‘हँ’ सुनि बिशेसर काका बजला-

“ओइमे की भेल?”

रवि भाय-

“प्रकाशक खेतक सटले दछिनबरिया खेतबला बाँस रोपि देलकै। प्रकाश दिल्ली धेने रहल। हमरा अपना ऐछे, ओकरा खूब ढकियेलौं। हित-अपेछित सभ प्रकाशकेँ जानकारी दैत रहलै मुदा भक्क् टुटबे ने केलइ।”

बिशेसर काका-

“की भक्क्?”

रवि भाय-

“प्रकाशकेँ एतबो ने बुझैमे एलै जे परदेशमे रहनिहार लोक परदेशेमे घर बना रहल अछि, गामोमे आब पक्के घर बढ़ि रहल अछि, बड़ैब-बाड़ी आकि टाटे-फरकक जरूरत आब लोककेँ किए बुझि पड़तै। तखन लोक अनेरे किए बँसवारि लगौत...।

ओहो माने बगलक खेतबला- दिल्लीए-मे एकेठाम रहबो करै छैथ, मुदा अपनो नीक-बेजा बुझैले लोक तैयार नइ अछि। प्रकाशकेँ

तँ बुझबाक चाही ने जे उपजाउ खेतमे बाँस रोपि दुइर करब छी। ई सम्पैत नष्ट करब हएत।”

बिशेसर काका बजला-

“केते माथा-पच्ची रवि करबह। अपन काज पहिने बाजह।”

अधमरू जकाँ रवि भाय बजला-

“काका, की कहब। ओही खेतकेँ, जेकरा छौर-गोबरक ढकियासँ ढकियेने छेलौं जइसँ आड़ि-पाटिमे सभसँ नीक उपजा होइए। गामेक लोक प्रकाशकेँ उचाढ़ि चढ़ा अछाह-जमीनक कीमत दऽ कऽ लिखबैक बात पक्का कऽ लेलक!”

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मन झमान भऽ खसलैन। बजला-

“रवि, एके दिने थोड़े जिनगी कटि जाइए, एक दिन जीबैक लूरि जेकरा छै, ओकरा कटैए। अखन मनो थाकि गेल अछि तँए आगूक गप आगू–दोसर दिन–करब।”



शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017

विघटन

महिना दिनसँ ऊपरे शुभकान्त काकासँ भेँट भेना भऽ गेल, तँए भेँट करैले कए दिनसँ मन उबियाइत रहए। मुदा तेहेन धुमसाही लगन-पातीक अछि जे सभ नाको-दम भाइये रहला अछि। समाजमे छी, तँए अपनो ओइसँ भिन्न नहियेँ छी। तहूमे डेढ़ मास पाछूसँ लगन शुरू भेल, माने आधा माघसँ जे लगन समधानि कऽ धेलक ओ फगुआ टपाइये कऽ छोड़लक। ओना, लगन-पाती ठमकल मुदा सोल्होअना बिसरजन नइ भेल। अधा-छीधा अखनो धेनहि अछि।

शुभकान्त काकापर नजैर पहुँचते अन्तिम दिन–माने भेँट भेलाक अन्तिम दिन–क बात मोन पड़ल। ओना, गप-सप्पक क्रममे शुभकान्त काका बाजल छला जे जाबे गाम-समाजमे विघटनक रस्ता नइ बन्न हएत ताबे गामक उत्थानमे बाधा उपस्थित होइते रहत। तहूमे विघटनो तँ विघटने छी। कोनो कि एक्के रंगक अछि जे सभकेँ बुझले रहत। ओकर तँ चालियो गिरगिटिया आ रंगो गिरगिटिये छइ।

शुभकान्त काकासँ भेँटक अन्तिम दिन जे गप-सप्प भेल छल तइमे असल विषय छल ‘सरकारक सड़क योजना।’ गाम-गाममे पक्की सड़क बनत, बनबो कएल आ बनियोँ रहल अछि। ऊँचगरो बनत आ मजगूतो बनत। नीक बात। अही क्रममे शुभकान्त काका विघटनक चर्च केलैन। ओना, अपन मन वौआ कऽ बैशाखमे जे बेटाक बिआह करब आ तइमे मोटर साइकिल सेहो देत, तइ दिस झूकि गेल छल। जखन घरमे मोटर साइकिल औत, तइले जँ नीक

सड़क नइ रहत तँ ओकर सेखीए की रहत...। मन उधिया गेल रहए। उधियाइत-उधियाइत भदुआर घाटक चाहक दोकानपर पहुँच गेल। अफीमक पानि मिलौल चाहक सुआद जे ओकर छै ओ दोसराक नइ छइ। अछि तँ बहुत शिकारी–माने अफीमक पानि मिला चाह बनौनिहार शिकारी–मुदा ओकर शिकरपन अगुआएल छै, तँए इलाकाक शिकार पकड़ने अछि। नाओं सुनि अपनो मन छुछुआइये लगैए, जँ डेढ़िया दाम दऽ दियौ तँ चाह पीबैत-पीबैत या तँ अलिसाइये जाएब, नहि तँ चुनावक समैयक चुटपुटिया नेता जकाँ भाषने करैत विदा हएब।

मुदा लगले मन बैशाखक लगनसँ पछुआए लगल। मनमे उठि गेल परम्परा। एक मनमे परम्परा उठिते दोसर मन बाजल- “सासुरमे देल बेटाक सवारीपर चढ़ब पाप छी!”

मने-मन मनमनाइते रही कि बिच्चेमे शुभकान्त कक्काक शब्द- ‘विघटन’ नचैत-नचैत आगूमे खसल। खसिते मनक विचार कँचका माटिक बनल पजेबा पकबैक विचार जकाँ पकपन मनमे आबए लगल। कुम्हारक आवा जकाँ जेना-जेना राति ढहैत जाइए तेना-तेना आवाक बरतनमे पकपन बढ़ैत जाइए आ भोर होइत-होइत पकपन पेबला पछाइत शान्त होइत सेरा जाइए जइसँ कुम्हार ओकरा उघारि बरतनकेँ हाथमे उठा आँगुरसँ टोनि-टोनि अपन कारीगरीकेँ जाँचि-जाँचि सन्तुष्टि पबैए...। मन बेकाबू हुअ लगल जे परिवारमे अहिना सभ दिन लटकल रही आ गामक ऐगला-पैछला बात बुझबे ने करी..? ऐगला-पैछला बात ई जे केमहर सड़क बनैए, केमहर कोसीक नहर खुनाइए आ केतए स्टेट बोरिंग गराइए...। मुदा लगले मन असथिर भऽ गेल। असथिर होइक कारण भेल जे छुट्टी दुआरे शुभकान्त काका भेँट नहि भेला, ऐमे अधले की भेल। ओहो तँ ओहने लोक छैथ जे गामक सिमानकेँ ऐपार-सँ-ओइपार टहलबे करै

छैथ, तखन तँ भेल काजक कुसंयोग जे भेँट नहि हुअ देलक। ओना, मनुक्खो जँ अपन मोटा फेक घरसँ पड़ा जाए, ओहो अपना जगहपर नीक अछि, मुदा घरक डरे भागब नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभकेँ स्वतंत्र जिनगी होइ, ऐमे अधले की भेल।

मन नइ मानलक। शुभकान्त काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जहिना ओ अपन पैरक सवारी रखने छैथ तहिना अपनो अछिए। तहूमे गामेक बात छी, अधो किलोमीटरसँ कमे दूरीपर हुनकर घर छैन। ओना, महिना दिनसँ जे आएब-जाएब छुटल छल तइसँ अनठियो केते गोरे पुछबे करता जे 'मन-तन खराब भऽ गेल छेलह जे रस्तो-पेरा बन्न केने छेलह।' फेर मनमे भेल जे ओहो तँ नीके ने हएत। भेँट करए एक गोरेसँ जाएब आ कुशल-छेम अनेकोसँ हएत। हँ, तखन एतेक सतर्की जरूर रखैक अछि जे रस्ते-रस्ते कुशल-छेम करैत चलब, डेग नहि रोकब। ओना, गपाह लोकक कमी नहियेँ अछि मुदा ओ अछि गप्पीए सभ-ले। हमरा सन-सन लोक-ले तँ नहियेँ अछि। रहबो केना करत। कुशलो-छेममे ने जीवन छीपल अछि। आइ केना जीबै छी, एतबे ने बुझब अछि। तइले अनका जकाँ हाइ-हाइ करब से की कोनो कुकुर कटने अछि जे नाचल घुरब। तँए समाजक बीच जेते सामाजिक जिनगी अछि वएह कुशल-छेम ने जानब-बुझब अछि...।

किछु दूर गेलापर मकशूदन भाय भेटला। मनमे चपचपी देखि पुछि देलिऐन- "भाय, लगन सुतरल किने?"

मकशूदन भाय, बहुआयामी लोक छैथ। चपचपाइत बजला-

"एतेक लालमोहन आ रसगुल्ला जिनगीक कोनो सालमे नइ खेने छेलौं जेते ऐ साल खेलौं!"

मकशूदन भाइक चपचपी देखि बजलौं- "हजारो टपौलिऐ कि

पछुआएले रहलौं?”

जहिना भोरे-भोर केकरो कोनो नीक फल भेटै छै आ मन खुशी ऐ दुआरे होइ छै जे भरि दिन शुभे-शुभ रहत तहिना टपाक-दे मकशूदन भाय बजला-

“यएह ने भेल भोरुका फल। सामाजिक लोक छी, सोंसे गामसँ खाँएन-पीन रखने छी, गामक बेसी लोक तँ परदेशीए अछि, मुदा बिआह-दान तँ सभ परिवारमे अछिए। तँए महिना दिनक नम्बरमे काज चला कहुना फगुआ टपलौं।”

पुछलयैन-

“ई तँ भेल खेनाइ-पीनाइ, मुदा लगन तँ असल लड़का-लड़कीक होइ छै किने..?”

जेना नीक गोटी सुतरल होनि तहिना ठहाका मारि बजला-

“बौआ, जिनगीमे एहेन सुतरान कहियो ने सुतरल छल जेना ऐ बेर सुतरल!”

मकशूदन भाइक रसगर बात सुनि मनमे भेल जे जहिना लालमोहन आकि रसगुल्लाकेँ कियो हाथसँ तोड़ि-तोड़ि खाइए आ कियो दाँतसँ काटि-काटि खाइए, मुदा रस तँ लालमोहने आकि रसगुल्लेक रहै छै किने। तँए विचार भेल जे मकशूदन भायकेँ लगनमे जेते सुतरान सुतरलैन ओ टुकड़ी-टुकड़ीमे सुनब बेसी नीक हएत, नमहर रसगुल्ला मुँहमे लइकाल तँ कियो लऽ लइए मुदा जखन चक्कीए रूकि जाएत, माने मुँहक चलबे रूकि जाएत तखन सुआदे की लेब आ रसे की भेटत? खाएर.., जहिना कोनो काज वा विचार बुझैक उत्कण्ठा मनमे जगने मुँहक जे रूप बनैए, ओहने रूप बना पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

जहिना केकरो अपन मूल्यवान काज अपन जिनगीक मूल्यकेँ अँकैए, जइसँ जे तुष्टि भेटै छै वएह तुष्टि ओकर जिनगीकेँ ओते सन्तुष्टि प्रदान करैए। जइसँ जेहेन उत्साह जगै छै, ओहने उत्साहित होइत मकशूदन भाय बजला-

"तीस लाखक काज तीन लाखमे केलौं!"

मकशूदन भाइक उत्साहकेँ आरो उत्साहित करब नीक बुझि कहलयैन-

"तखन ते सताइस लाखक काज सुतारलिऐन!"

अपन काज दिस बढ़ैत मकशूदन भाय बजला-

"बौआ, मनुक्खक मोल मनुक्खतामे नहि रहि गेल, ओ रुपैआमे बीकि गेल अछि। तँए मनुक्खतो सोल्होअना मेटा गेल, एहेन कहब अपन अपमानित करब हएत।"

मकशूदन भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे विचारकेँ जँ आरो टुकड़ी बना देब से बेसी नीक हएत। बजलौं-

"भाय, अहाँ ते मनुक्खता आ रुपैआ दुनू कहि देलिऐ?"

गुरुत्व भावमे मकशूदन भाय बजला-

"पाइयक बाढ़िमे लोक भँसिया रहल अछि। एकर अनेको कारण अछि जइमे दूटा जड़ियाएल कारण अछि।"

बिच्चेमे पुछि देलिऐन-

"कोन दुनू?"

"पहिल भेल- अखन धरिक जे जिनगी अपन समाजक रहल ओ अभावक रहल, माने गरीबीक रहल। जिनगीक सैंकड़ो जरूरत अभावमे मरैत रहल आ जिनगी झड़ि-झड़ि झड़ैत रहल।"

पहिल कारणकेँ नमरबैत देखि टोकि देलिऐन- "दोसर?"

बजला- “अखन ते ओते निचेन नइ छी जे धरिया कऽ सभ बात कहबह। औगताएल छी तैयो मुड़कट्टीमे कहि दइ छिअ। पाइयोबलाक बीच मनुक्खता पनैप रहल अछि। इंजीनियर लड़का–माने नोकरी शुदा लड़का–लग जखन लड़कीक कुलशीलतोक चर्च केलौं आ अपन कमाइक संग परिवारोक बात कहलिऐ तखन ओ बाजल- ‘पिताक संग कन्याकेँ देखब आ वैचारिक तुलना करैत निर्णय लेब।’

मकशूदन भाइक झमटगर विचार सुनि गप-सप्प करैक उत्साह आरो जागए लगल, मुदा मन रोकि देलक। रोकि ई देलक जे जइ काजे विदा होइ ओ काज लक्ष्य भेल, मुदा बीचमे जँ कोनो दोसर काजे रूकि जाइ छी तँ ओ बिनु बुझल-गमल काजमे अँटकब हएत। ओना, परिणाम दुनू भऽ सकैए- नीको भऽ सकैए आ अधलो भऽ सकैए, तँए अधला भेला पछाइत जे अपन अँटकबकेँ कोसब तइसँ नीक जे मकशूदन भायसँ समय बना पछाइत सभ समाचार बुझि लेब...।

बजलौं-

“भाय, अहाँक विचार तँ छोड़ैक मन नइ होइए मुदा शुभकान्त काकासँ भेँट करए विदा भेल छी, तँए अखन...।”

हमर बात सुनिते मकशूदन भाय अपन सहमति दैत बजला-

“बौआ, हमहूँ अखन काजेमे विदा भेल छी तँए दोसर घड़ी दुनू भाँइ निचेनसँ सभ गप बतिया लेब।”

अपन मन अपन काजसँ कनी घुसैक गेल। घुसकैक कारण भेल जे मकशूदन भाय अपन काजक चर्च कऽ देलैन। मन काबूए-मे ने रहल, मुहसँ खसि पड़ल-

“केहेन काज करए विदा भेल छी?”

हमर बात मकशूदन भायकेँ नीक लगलैन। आन जकाँ नहि जे आगूसँ टोकलौं कि पाछूसँ, तइले खिसिया जाएब। नीकक कारण मकशूदन भाइक मनमे जगलैन जे जिनगीमे जेते अपन काजकेँ धोइ-पखारि चलैत रहब, ओते जिनगीमे नंगपन अबैत रहत। जइसँ सभ सबहक किरदानी बुझत। ऐसँ नीक-बेजा दुनू होइ छै, ओही नीक-बेजाइक बीच तुलित होइत जिनगी चलए वएह भेल जिनगीक नंगापन, जे देवलोकमे महादेवकेँ रहैन।

मकशूदन भाय बजला-

“लगनक महाजन गौड़ी काका छैथ, हुनकेसँ हिसाबो-बारी कराएब अछि आ जहाँ धरि संभव हएत देबो करबैन।”

अखन तक मकशूदन भाइक सम्बन्धमे धारणा बनल छल जे बिआह-दानक बीचमैनमे आमदनी होइ छैन, मुदा महाजनीक बात मकशूदन भाय उठा देलैन! बजा गेल-

“जखन लगनेमे लागल छेलौं तखन महाजनीक फेड़ केना लगि गेल?”

जहिना देहक ऊपरका भाग–जेकरा धोइत-पखारैत रहै छी–सँ धोइत-पखारैत कियो हृदयकेँ धुअ-पखारए लगै छैथ जइसँ मनमे शान्तसँ प्रशान्त सागरक शीतलताक अनुभव होइ छैन तहिना मकशूदन भायकेँ भेलैन। आत्म-बिसवास भरल बोलमे बजला-

“बौआ, घटकैती करै छी, लोक ‘घटक भाय’-‘घटक काका’ सेहो कहिते अछि मुदा जेकरा दलाल लोक बुझैए, हम से नइ छी। परिवारक यज्ञ स्वरूपमे बिआहकेँ सभ दिनसँ बुझबो करै छी आ मानि कऽ करबो करै छी। ओना, बजनिहारकेँ कोनो ठेकान थोड़े छै, जे मनमे एलै से बाजल। मुदा अपना जेते बुधि अछि तेते विचारि सेवा बुझि करै छिऐन। केतौ-केतौ खेबो करै छी, जलखै आ चाह-

पान तँ लोक आब अनदिनो रस्तो-पेरामे करैए। मुदा अपन देही जे अतिरिक्त खर्च अछि ओ अपन करै छी। यएह हमर जिनगीक पूजी छी, तँए एकरा जँ नइ बँचा कऽ राखब तँ पूजिये मेटा जाएत। जखन पूजिये मेटा जाएत तखन जीब केना!"

मकशूदन भाइक विचार सुनैत-सुनैत जेना मन भरि गेल। बजलौं-

"भाय साहैब, अखन अहूँ काजमे छी आ हमहूँ काजे जा रहल छी, तँए अखन एतै एकरा अँटका दियौ। निचेन भेलापर काल्हि-परसू भेँट करब आ निचेनसँ भरि लगनक गपो-सप्प करब।"

निसचित समय ऐ दुआरे नइ कहलयैन जे जखन कौल्हुका काजक विचार करब, तइमे जे अँटावेशक संभावना देखब तखने ने कौल्हुका जवान हारब। परसू-ले काल्हि अछि। मकशूदन भाय काल्हि-परसूक अन्तर दिस धियान नइ देलैन। नइ दैक कारण छेलैन जे मास दिनक थकानकेँ दरबज्जापर बैस बितबए चाहै छला तँए समैयक अभावो नहियेँ छेलैन।

बजला-

"चाहपत्ती-कॉफी-पान-मसाला आ किछु खाइ-पीबैक वौस जे अछि, ओकरा चाहै छी जे जहिना लगन गेल तहिना ओहो जल्दीए सठि जाए, तँए जखन अबिहह तँ किरिण डुमैत अबिहह। जइसँ साँझक जे पहर अछि ओइमे भरि मन गप-सप्प करब आ...।"

बजलौं-

"बड़ नीक।"

दू डेग आगू हमहूँ बढ़लौं आ दू डेग आगू मकशूदनो भाय बढ़ला। मुदा जहिना बिसरल बात लोककेँ मोन पड़ै छै तहिना मकशूदन भायकेँ मोन पड़लैन। मोन पड़िते ठाढ़ होइत पाछूए-सँ

बजला- “बौआ, कनी रूकह। जोरसँ बजैबला नइ अछि।”

मकशूदन भाइक विचार सुनि ठमैक कऽ रूकि गेलौं। कोन एहेन बात मनमे उठि गेलैन जे अखने घुमि कऽ आबि रहला अछि। अपनो थोड़ेक पाछू ससरलौं। लगमे अबिते मकशूदन भाय कहलैन-

“आबैसँ पहिने गामपर जलखै नइ करिहह। बहुत रास चीज-वौस अछि, अनेरे घरमे रखि कथी-ले सड़ेबो करब आ घरो मँहकाएब।”

बजा गेल-

“सड़लेहे खुआएब!”

ओना, बजैकाल बजा गेल मुदा वस्तु बनैक जे ढंग लोकक बीच आबि गेल अछि, ओइ हिसाबे ओ सड़ल वौस नइ भेल। टटके भेल। ओना, नीक आ सड़लक बीच बाइस सेहो अछि। सड़ल भेल जखन ओ वस्तु खाइयोमे कुसुआद लगए आ अहितकर सेहो हुअए। मुदा बाइसक चालि तँ विचित्र अछि। कोनो वौस जखने अपन टटकापन छोड़लक आकि ओकरा पीठेपर बाइसपन आबि जाइए, आ कोनो वस्तुमे जेते बाइसपन अबै छै तेते ओ टटकापन होइत जाइए। जेना रसगुल्ला, अँचार, पाल परहक आम, बगिया। ओना, बजला पछाइत मकशूदनो भाय आगू डेग बढ़ौलैन आ अपनो बढ़ेलौं मुदा मनमे रंग-रंगक मीठगर सुआर अबिते रहल।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर बैस शुभकान्त काका गामक जेना गंभीर समस्या–गंभीर समस्याक माने भेल ओहन समस्या जे समाजक आन परिवारक संग अपनो परिवारकेँ प्रभावित करैत हुअए–मे डुमल होथि तहिना आँखि-ताँखि बन्न केने देवालमे ओंगठल छला।

शुभकान्त काकाकेँ आँखि बन्न देखि रंग-बिरंगक विचार मनमे

उठए लगल। उठैक कारण भेल जे आदमी-आदमीक अपन-अपन हैसियत होइए। एकटा ओहन अछि जे कखन सुतल रहत आ कखन जागल रहत तेकर कोनो थाहे ने बुझबै। दोसर भेल काजक समयमे सुतनिहार आ तेसर भेल कोनो कठिन समस्याकेँ आँखिक पल्ला बन्न करैत ओकरा सुतियाएब। माने समस्याकेँ तहे-तह बुझैयो आ करैयोक विचार करब। मुदा किछु बजैसँ पहिनहि शुभकान्त काका हमर पैरक धमकसँ बुझि गेला जे कियो पहुँचला अछि।

ओसारपर चढ़ैत-चढ़ैत आँखि खोलि बजला-

“बौआ सुशील! बहुत दिन जीबह। मनमे तेते रास ओझरी सभ लगि रहल अछि जेकरा सौझरबैमे अपने ओझरा जाइ छी। भने तूँ आबि गेलह।”

शुभकान्त कक्काक विचार सुनैमे नीक लागल मुदा मन पाछू घुसकए लगल। पाछू घुसकैक कारण भेल जे जइ ओझरी (अपना संग समाजक समस्या)केँ दिन-राति शुभकान्त काका सोझरबैत चलै छैथ, तइ ओझरीकेँ हमरा बुते सोझराएल हएत। मुदा जहिना भगवानोकेँ भक्तक खगता होइ छैन, मालिकोकेँ नोकरक खगता पड़ि जाइ छै, तहिना ने मनुक्खकेँ सेहो सहयोगी मनुक्खक खगता होइते अछि। जँ कहीं अही विचारे शुभकान्त काका बाजल होथि, तखन अनेरे ने मनकेँ झुझुअबै छी। बराबरीक विचार मनमे आएल अबिते बजलौं-

“काका, अबैक मन ते ओही दिनसँ होइ छल जइ दिनसँ भेँट नइ भेल छेलौं, मुदा तेहेन ने ऐ बेरक लगन हूलि-मालि केलक जे राशनक दोकान जकाँ भऽ गेल।”

बिच्चेमे शुभकान्त काका टोकि देलैन-

“से की?”

'से की' तँ बहुत रंगक अछि, केते कहबैन? मुदा तैयो मोटरी बान्हि मोटा-मोटी कहलयैन-

"जे भेल से नीके भेल जँ राशनक दोकानपर लोक हूलि-मारि नइ करत तँ चाउर-गहुम कियो ओकरा कोठीमे थोड़े दऽ औतइ।"

ओना, अपन विचारकेँ समटैक कारण ईहो छल जे डेढ़ मासक पछुआएल विचार शुभकान्त कक्काक मुहसँ सुनैले आएल छी। तैठाम जे अनेरे लगन-पातीक बातमे ओझरा जाएब तँ आन घाटा जे हुअए मुदा समैयक घाटा के पुरौत।

हमर बात शुभकान्त काकाकेँ जेना घाव केलकैन तहिना अपन विचारकेँ अगुअबैत बजला-

"बौआ, गाम उजैर रहल अछि!"

भोरक सपना जहिना केकरो राजगद्दीपर बैसा नीन तोड़ि दइ छै आ ओ भकुआएले चारूकात चौंकन्ना हुअ लगैए जे गद्दी कहाँ देखै छी! तेकर ठीक विपरीत मनमे भेल जे जखन गामे उजैर जाएत तखन रहब केतए? केतबो मनकेँ चकोना करी तैयो कोनो कोण देखबे ने करिऐ। मनमे उठल- शुभकान्त कक्काक विचारकेँ आँखि मुइन सभ दिन मानितो एलौं हेन आ जहाँ तक भऽ पड़ल तहाँ तक करितो एलौं अछि। शुभकान्त काका अधला बात बजता से मन मानैले तैयार नहि छल। चारूकात चकोना भेला पछाइत बजलौं-

"से की काका?"

ओना, कोनो बात बुझैक जिज्ञासा अधिकांश लोककेँ होइते छै, मुदा जिज्ञसोक तँ अपन-अपन खाढ़ी बनल अछि। किएक तँ सबहक ने एकरंग ओकाइत अछि आ ने एकरंग हस्ती, सोभाविक अछि जे एकरंग रस्तो किए रहत। माने अनेको खाढ़ियो बनल अछि आ अनेको चलैक रस्तो तँ बनले अछि...। मन ततमताए लगल।

ततमताएल देखि शुभकान्त काका बुझि गेला जे जहिना कियो कोनो पोखैर देखि डेरा जाइए जे ई डूमा पोखैर छी तँए नइ पैसब, तहिना सघन गाछीमे भूत-प्रेतक बास बुझि डरि जाइए जे मुड़ीए मचोड़ि देत। जखन मुड़ीए मचोड़ि देत तखन छुच्छे धड़ लऽ कऽ केना जीब..?

ततमतीकेँ धकियबैत शुभकान्त काका बजला-

"सुशील, पोखैर हौउ कि गाछी, खेत हौउ कि रस्ता, सभ गामक छी। जखने गामक छी तखने ने सौंसे गौंआँक भेल। जइसँ सभ बास करैत जिनगी काटि रहल छी, तँए ओकरा ऐ नजरिये देखए पड़त जे ओ मनुक्खक शुभेक्षु केना बनल रहत। तइले ते हमहीं-तोहीं ने विचारबो करब आ विचारक अनुकूल करबो करब?"

सतहक सहटल विचार सुनि अपनो सहैट कऽ लगमे पहुँचैत बजलौं-

"से तँ छीहे ने काका।"

ओना, विचारक क्रममे बजा गेल मुदा शुभकान्त काका की बुझलैन से तँ मुँह खोलला पछातिये बुझब, मुदा से नहि, शुभकान्त काका विचारकेँ शुभ बुझि बजला-

"बौआ, गाम छोड़ि भागब आइ धरिक इतिहास रहल अछि, अखनो धड़ल्लेसँ अछि, मुदा गाम अपना रहै-जोकर बनाएब ई तँ गौंए-क कर्तव्यक श्रेणीमे अछि किने। एहेन बुझनिहार केते गोरे छैथ?"

ओना, गपक क्रममे सभ बात सुनलौं, मुदा बुझैक क्रममे शुभकान्त काका की बुझि बजला आ अपने की बुझै छी एहेन दूरी तँ बनले रहल। मुदा लगले मन मुड़ियाइत विचार देलक जे जखन गामे-समाजक विचार छी, जे बहुत सुनलहो अछि आ बहुत देखलहो ऐछे,

तखन अनेरे मनकेँ मारि रहल छी।

बजलौं-

“हँ से तँ भाइये रहल अछि।”

ओना, दोहरी-तेहरी प्रश्न शुभकान्त कक्काक विचारमे छेलैन, मुदा सुतिहार जकाँ तँ तखने ने सुतिया कऽ बाजब जखन सूत-सूतक किरदानी बुझब मुदा से तँ बुझि नहि रहल छेलौं, तँए मिलजुमने बजलौं। ओना, हमर बातसँ शुभकान्त काकाकेँ जेना सह भेटल होनि तहिना मुँहक चुहचुहीसँ बुझि पड़ल। हुनकर चुहचुहीसँ अपनो मन चुहचुहा गेल छल जइसँ विचारक चुहचुही मनमे उपकिये गेल छल जे शुभकान्तो काका आँकि लेलैन। आँकिते अँकियबैत बजला-

“बौआ पान साए बीघाक रकबा अपन गामक अछि, हजारसँ ऊपरे परिवारो हएत।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ से ते हेबे करत!”

बजला-

“पहिने बास आ चासकेँ फुटाबह।”

‘बास’ तँ बुझलौं मुदा ‘चास’ बुझबे ने केलौं जे फुटाएब। तँए मन कनी मिड़मिड़ाए लगल। जे बात शुभकान्त काका बुझि गेला। तँए हमरा बिना किछु पुछने वएह बजला-

“जेते परिवार अछि ओकरा बसैले तँ जमीन चाही किने?”

सहगर विचार सुनि बिजलौं-

“हँ, से तँ चाहबे करी।”

शुभकान्त काकाकेँ जेना हमरा विचारसँ उत्तर भेट गेल होनि तहिना बजला- “बासभूमिसँ आगू बढ़ि आब चास दिस चलह।

देखिते छहक जे चारू बाध–पूबरिया-पछबरिया-उत्तरबरिया-दछिनबरिया–मे साए बीघासँ ऊपरे चौरी जमीन अछि, जे शुरूहे अखाढ़मे कड़गड़ बर्खा भेने वा बाढ़ि एने डुमि जाइए। जइमे कोनो साल जँ सुखार भेल तँ दूध महक डाढ़ी जकाँ किछु उपजा भेबो कएल आ नहि तँ सोल्हन्नी खसले रहि गेल।”

अपनो एक बीघा चौरी खेत अछिए। देखल-सुनल-भोगल अछिए। केते साल उपजाक लाभक कोन बात जे लगतो डुमि जाइए। बजलौं-

“हँ से सएह बुझू।”

शुभकान्त काका बजला-

“गाममे पोखैर-झाँखैर केते हएत?”

बजलौं-

“अकौर गाम जकाँ अठारह गण्डा तँ नहि अछि मुदा तीस-पैंतीसटा सँ कम नहियेँ हएत। पोखैरक अतिरिक्त डबरा-कोचाढ़ि सेहो पचाससँ ऊपरे हएत।”

शुभकान्त काका बजला-

“तीस-पैंतीसक बात छोड़ह, पचीसेटा मानि लहक। जेकर रकबा केते हएत?”

अपना जखन पोखैर नइ अछि तखन अनकर पोखैरक हिसाबे किए बुझूँ, तँए बुझले ने छल। मुदा जखन शुभकान्त काका पुछलैन तखन जँ किछु ने बाजब सेहो केहेन हएत! बजलौं-

“पचीसटा अछि तँ पचीस बीघा मानि लिअ।”

‘पचीस बीघा’ सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे सुशील सोलहन्नी अनाड़ी अछि। बजला- “बड़की पोखैरक रकबा

केते अछि से नहि बुझल छह?”

कहलयैन- “सुनै छी दैंतक खुनल पोखैर छी, बाबन बीघाक अछि।”

हमर बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन मुस्कियेलैन। मुस्कियाइते बजला-

“जखन एकेटा बाबन बीघाक अछि तखन आरो केते हएत।”

जेना कान ठाढ़ भेल, बजलौं-

“तखन ते बहुत हएत!”

‘बहुत’ सुनि शुभकान्त काका बजला-

“नीक जकाँ तँ हमरो नइ बुझल अछि मुदा एते तँ बुझबे करै छी जे कोनो पोखैरक तीन अंग होइए। पहिल पनिझाउ, दोसर कछेर आ तेसर महार।”

बजलौं-

“हँ, से तँ सभ पोखैरमे अछिए।”

शुभकान्त काका बजला-

“एकरो अखन एतै छोड़ह। गाममे पुबरिया बाध आ पछबरिया बाधमे कोसी नहर खुनाएल अछि जइसँ पटौनीक काज केहेन होइए से तँ देखिते छहक।”

बिच्चेमे बजलौं-

“हँ, से ते जखन पटौनीक खगता रहैए तखन पानियेँ ने अबै छै आ जखन पानिसँ खेत डुमल रहै छै तखन नहरोमे पानि आबि आरो भरिये दइ छइ!”

विचारकेँ आगू बढ़बैत शुभकान्त काका बजला- “एतबे नहि ने अछि। आरो बहुत समस्या अछि जइसँ गामक उपजावारी मारल

जाइए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पुछलयैन-

“से की अछि?”

बजला-

“पहिनौं–माने जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा नइ उठल छल–गाछी-कलम लोक लगबै छला आ लगेनौं छला, जे फलक खेतीक रूपमे छल। मुदा जखन पर्यावरण-प्रदूषणक हवा चलल तखन फलक खेतीक रूप बिगड़ए लगल!”

फलक खेतीक की रूप बिगड़ए लगल से नजैरमे एबे ने कएल। पुछलयैन-

“से की काका?”

शुभकान्त काका बजला-

“लोकक नीक विचार हवामे उधिया गेल। फलोक गाछसँ ऑक्सीजन भेटैए, जइसँ दूषित हवा स्वच्छ बनैए से विचार कमि गेल आ बढ़ि गेल जे काँटक गाछ लगौने अधिक ऑक्सीजन भेटैए! जइसँ उपजा धीरे-धीरे कमए लगल आ बोन-झाड़ बेसिया गेल।”

आँखिक सोझमे देखल ऐछे तँए सहमत दैत बजलौं-

“हँ, से तँ भाइये गेल अछि!”

सहमत पबिते शुभकान्त काका बजला-

“एकरो छोड़ह। देखबे करै छहक जे गामक जेते उपजाउ जमीन अछि ओ केना अनउपजाउ भेल अछि। तैपर सँ बाहरी बेपारी सभ आबि-आबि की-कहाँ क गाछ लगबैक तेहेन-तेहेन फर्मूला सभ लोकक सोझमे रखैए जे गाछ-बिरीछ फलक साधन नहि पाइक

साधन बनि रहल अछि!”

बजलौं- “हँ, से तँ हमहूँ पचीसटा गाछ सागवानक रोपलौं अछि। बीसे बर्खमे लाखक पैदावार भऽ जाएत।”

शुभकान्त काका बजला-

“एक दिस फलक उपटान भेल जा रहल अछि, जे मनुक्खक पौष्टिक अहार छी, दोसर दिस जइ लकड़ीक गुणक चर्च करैए–माने घरक समान बनबैमे–तेकर जगह लोहा आ फाइवर-प्लास्टिकक वस्तु नेने जा रहल अछि तखन ओइ लकड़ीक उपयोग केतए हएत?”

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जेना भक् खुजल। बजलौं-

“हँ, से तँ भाइये रहल अछि!”

सहमत पबिते शुभकान्त काका बजला- “एकरो छोड़ह। गामक उपजाउ जमीनक–माने उत्पादित पूजीक– यएह गति भेल अछि आ भेलो जा रहल अछि। आब बास भूमिक लएह।”

बासभूमिक नाओं सुनिते आरो साकांच भेलौं। इशारा करैत बजला-

“देखिते छहक, गाममे सड़क सभ बनि रहल अछि। बाढ़ि-बर्खाक इलाका अपना सबहक छीहे। दुनू बेठेकान अछि। रौदियो होइए आ दहारो तँ होइते अछि। बाससँ माने घर-आँगनसँ ऊँचगर-ऊँचगर सड़क बनैए–जइमे पानिक निकासीक समुचित बेवस्था नइ होइए। जखन बाढ़ि औत आकि बेसी बरखे हएत तखन ओ पानि घेरा कऽ बासोकेँ उपटौत आकि नइ उपटौत?”

नजैरपर चढ़िते चकित होइत बजलौं- “कोसिकन्होसँ बदतर हालत भऽ जाएत!”

शुभकान्त काका बजला- “एहेन अपनेटा गाममे नहि, गाम-गाममे अहिना विघटन भऽ रहल अछि। तखन तोंही कहह जे गाम उजरत की नहि?”

शुभकान्त कक्काक विचार सुनि मन औनाए लगल। कोनो रस्ते ने आगूमे देखिऐ जे किछु बजितौं तँए उदास होइत चुपे रहलौं।

चरियबैत शुभकान्त काका बजला-

“चुप भेने काज नइ चलतह। अपन जीबैक उपाय अपने नहि सोचि आगू बढ़बह तँ अनका भेरोसे थोड़े हेतह।”



शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017

टुटल मनक जुटान

दुनियाँमे जहिना कोनो बेकती, परिवार वा समाजसँ मन टुटिते लोक अपन जिनगीक अन्तो करए चाहैए आ ओइ जिनगीकेँ छोड़ि पड़ाइयो चाहैए तहिना आइ उन्नैतलाल काकाकेँ बेर-बेर मनमे उठि रहल छैन। ओना, कहैले तँ लोक अपने मनटा–माने शरीरक भीतर जे संचालन कर्ता अछि–केँ मन बुझैए। मुदा की तेतबे अछि? नहि। हँ, ओहो अछिए। मने ने मनुक्खकेँ मनुखाहो बनबैए आ मरखाहो बनबैए। कहैकाल ने कहि दइ छिऐ जे सबहक मन बरबइरे बनल अछि माने ई जे एके माटि-पानिक बनल अछि, भऽ सकैए ईहो विचार दमगर हुअए, मुदा ईहो तँ प्रश्न ऐछे जे एक माटि-पानिसँ बनल वौस एके गुण-धर्मक ने हएत? मुदा बेकतीक मनकेँ जँ एक मानियोँ लइ छी, तखनो तँ परिवारक मन आ समाजक मन बाँकी रहिते अछि। जखन कि दुनूमे सँ–माने परिवार आ समाज–कोनो मनुक्ख जकाँ नइ उड़ैत चलैए।

ओना, मनुक्ख जकाँ ओ लगले अमेरिका आकि लगले चीन नइ पहुँच जाइए माने हवाइ-जहाजसँ चीने होइत अमेरिका वा अमेरिकेसँ चीन होइत अपना ऐठाम अबैए। भलेँ से नहि हुअए मुदा ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे लोके जकाँ परिवारो आ समाजो नहियेँ उड़ैत चलैए। ईहो तँ होइते अछि जे कोनो परिवार एक गामसँ उपैट दोसर गाम जा बसैए आ कोनो समाजो अबेवहारिक विचारसँ बेवहारिक विचार दिस बढ़ि अपन गुण-धर्म बदैल लइए, तँ कोनो

बेवहारिक विचारसँ अबेवहारिक विचार दिस सेहो बढ़िते अछि। ओना, मनुक्खे जकाँ परिवारो आ समाजो नहियेँ छी जे पेटक खातिर रने-बने वौआएल फिरत। मनुक्खकेँ पेट जरै छै तँए भागल फिरैए आकि दौड़ल घुमैए। ओना, खाली दौड़बे-टा करैत तखन तँ ईहो कहल जाइत जे पेट-ले परान गमबैए, मुदा तैसंग अपन सभ किछु गमबैले सेहो तैयार रहिते अछि ईहो तँ कहल जा सकैए।

भिनसुरका समय। लग्गी भरि ऊपर सुरूज उठि चुकल छल। दरबज्जापर बैसल मने-मन उन्नैतलाल काका अपनो, परिवारो आ समाजोक जे क्रिया-कर्म देखि रहला अछि तइसँ मन भीतरे-भीतर छँहो-छीत भऽ रहल छेलैन। मनक पूर्व निर्धारित जे विचार समुद्रसँ समृद्धपन दिस उन्मुख छेलैन ओ एकाएक झहैर-झहैर कऽ झड़ि रहल छेलैन..! उन्नैतलाल कक्काक मनमे उठि रहल छेलैन- परिवारकेँ जइ रूपेँ आगू बढ़बए चाहै छैलौं आ की देखि रहल छी? जँ अहिना परिवारक भीतर परिवारजनक बीच चलब शुरू हएत तखन केते दिन परिवार परिवार जकाँ चलि सकैए? जँ सम्मलित रूपमे नहि चलत तखन परिवारमे समृद्धता केना औत..?

उन्नैतलाल काका ने आगूक कोनो स्पष्ट रस्ता देखि रहल छला आ ने पाछूए घुसकैक मन कबूल कऽ रहल छेलैन। किछु करैत किछु ने बनि पाबि रहल छेलैन। तही बीच सोझमतिया काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीक हाथमे चाह देखिते उन्नैतलाल काका बजला-

“चाह पीबैक मन नइ होइए।”

ओना, काकाकेँ चाह पीबैक मन नइ होइतो चाहक अभ्यासी विचार जागिये रहल छेलैन। तैबीच चाहक गिलास आगू बढ़बैत सोझमतिया काकी कहलकैन- “अहिना दिनक दोख भेने मनमे

कुवाथ अबै छै, चाह पीब लिअ। मन खनहन होइते जिरा जाएत।”

एक तँ परिवारक बीच जे समांग सभ चालि-ढालि पकड़ने जा रहल छैन तइसँ उन्नैतलाल काका मने-मन कुपित होइते छला जे अपन विचारकेँ टुटैत-फुटैत देखि आरो मेघौन जकाँ चिन्तीत मन सघन भऽ रहल छेलैन। मुदा पत्नीक आग्रहकेँ स्वीकारैत उन्नैतलाल काका हाथसँ चाहक गिलास पकड़लैन। गिलास पकड़ैबते सोझमतिया काकीक मन सेहो सोझरेलैन। सोझराइते बजली-

“दुनियाँमे के एहेन अछि जेकर मन टुटै-जुटै आकि टुटै-फुटै नइ छै, ओ चाहे अपन दैहिक हौउ आकि पारिवारिक-सामाजिक।”

तैबीच उन्नैतलाल काका दू घोंट चाह पीब नेने छला। पत्नीक मुहेँ ‘टुटब-फुटब सोभाविक अछि’ सुनिते बजला-

“अहूँ अपन चाह एतै नेने आउ। दरबज्जेपर संगे-संग पीबो करब आ गपो-सप्प करब। भऽ सकैए जे गपे-गपीमे गपक जड़िये भेट जाए।”

ओना, सोझमतिया काकी उन्नैतलाल कक्काक विचार सुनि लजा गेली। सरमाइक कारण भेलैन जे आइ धरि पतिक सोझमे बैस एकठाम चाह नइ पीने छेली। चाहेटा नहि ने, ने कहियो सोझमे बैस जलखै केने छेली आ ने कल्लौए खेने छेली आ जहिया कहियो तीर्थाटन वा अस्पताल संगे जाइ छेली तहिया जँ एक बेर खेबो-पीबो करै छेली तँ पतिक सोझसँ उनैट–पाछू घुमि–खाइ-पीबै छेली...। मुदा सोझमतिया काकीक सोझमे अखन धर्म संकटक स्थिति बनि गेल छैन। धर्म संकट ई जे पतिकेँ अनुकूल राखब माने खुश राखब पत्नीक पुनीत कर्तव्य मानलो जाइए आ बुझलो जाइते अछि। तैठाम जँ पतिक विचारकेँ काटि देथिन सेहो नीक नहि बुझि पड़ै छेलैन आ दोसर दिस मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ

तोड़बो केहेन हएत..? ओना, दुनू विचारक बीच सोझमतिया काकी ओझराए लगली मुदा पतिक सेवामे ने उपस्थित छेली तँए अखन कोन रूप पूज्य हएत तैपर नजैर आबि जुमलैन। मनमे नव नजैर अबिते सोझमतिया काकी सोझे मतिये बजली-

"बड़बढ़ियाँ, अँगनासँ चाह नेने अबै छी। जखन दुनियाँ जनैए जे अर्द्धांगिनी छी, तखन सोझमे चाह पीब आ गप-सप्प करब कोन बड़का गप भेल। बड़का विषय तँ ओ ने हएत जे दुनू परानी परान-मे-परान सटबैत अपनो आ परिवारोक परानीक सम्बन्धमे विचार करब।"

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सेहो उन्नैत दिस बढ़लैन। उन्नैत दिस बढ़िते मनमे उठलैन- जहिना कोनो अन्न, तीमन-तरकारी वा फल-फूलकेँ, ओना फूलक दू रूप अछि- एक फल पैदा करैक आ दोसर स्वयं फलमे बदैल जाएब–तीन अवस्था होइ छै, 'खिच्चा-काँच', 'डमहाएल-जुआएल' आ 'तिलकल-पाकल' तहिना ने लोकक बुधियो-विवेक आ मनो-इच्छाक होइ छइ? ऐठाम अबिते उन्नैतलाल कक्काक मन सहमलैन। सहैमते अपन विचार जे विचारक अनुकूल अपन जीवन धारण करैक मन बनि गेल छैन तेकरा पुनरीक्षण करैक विचार जगलैन। जगिते मनमे एलैन- जखन परिवारमे ने सबहक बेवहारिक जिनगी एकरंग अछि आ ने वैचारिक आ ने क्रियागत तखन एकरंग विचार मानबो केते दूर तक सम्भव अछि?

तैबीच सोझमतिया काकी अँगनेसँ चाह पीबैत दरबज्जापर पहुँच उन्नैतलाल कक्काक आगू आबि मुँह मिलानी करैत विहुसैत घोंटे-घोंट चाह पीबए लगली। ओना, चाहक रससँ सोझमतिया काकीक मनमे जे होइत होनि, मुदा अपना बुझि पड़ल जे जहिना

माली अपन फुलवारीमे भोरे-भोरे फूल लोढ़ि, बगवार अपन बागमे फल बीछि खुशी होइए तहिना ने भोरे-भोर परिवारमे कोनो पारिवारिक नीक फल भेट गेने सेहो भऽ सकैए, जे सोझमतिया काकीकेँ भऽ रहल छेलैन।

सोझमतिया काकीक गिलासक चाह सठल नइ छैलैन मुदा अपन जिनगीक क्रियाक गाड़ीकेँ आगू दिस ससारैत उन्नैतलाल काका अपन हाथक खाली गिलासकेँ चौकीक निच्चाँमे रखि पान लगबैले पनबट्टी निकालि आगूमे रखलैन। ओना, उन्नैतलाल कक्काक अगुआइत काज देखि सोझमतिया काकी औगतेली नहि, माने कोनो काज करैकाल जे कियो पछुआए लगैत तँ अपन काज पुरबैले ओ काजकेँ अगुअबैत आगू बढ़ए चाहैए, से सोझमतिया काकीकेँ नहि भेलैन। तेकर कारण छेलैन जे पतिक हाथमे चाहो पहिनहि देने छेलखिन, पछाइत पतिक आदेश पेब आँगनसँ चाह आनि दरबज्जापर पीबै छेली तँए पछुआएल छेली।

पानक पात पसारैत उन्नैतलाल काका बजला-

“चाहे पीबैमे भरि दिन गमा देब तखन ओइ चाहक पुरती केना करब जेकर खगता अछि?”

ओना, सोझमतिया काकीक मन सेहो चाह पीबैत-पीबैत फुला गेल छेलैन जे फुलाएले मुहेँ बजली-

“एक तँ जिनगीक पहिल दिन बुझू आकि जिनगीक पहिल फुलाएल काज बुझू, तखनो जँ रसे-रसे नइ पीब तखन चाहक जे असल रूप चाह अछि ओ केना पेब सकै छी।”

सोझमतिया काकीक फुलाएल विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सेहो फलफलाए लगलैन। फलफलाइते बजला-

“जहिना हम अहाँक छी आ अहाँ हमर छी तहिना ने

परिवारोक जे अछि सेहो सभ अपनो छी अपनो सभ सबहक छिऐ।"

पतिक विचार सोझमतिया काकीकेँ नीक लगलैन। नीक लगिते अपनो आ परिवारोक नीक बुझि बजली-

"एकरा के काटत।"

जखने कोनो विचार वा काज जमीनपर उतैर माने भूमिगत होइत अपन अकाट रूप धारण करैए तखनेसँ ने ओ अकाट बनि ठाढ़ होइत चलए लगैए। बेवहारिक ई विचार मनमे अबिते उन्नैतलाल काकाकेँ अपन अकटपन जगलैन। अकटपन जगिते मनो गवाही दिअ लगलैन जे जखने एको गोरे विचारकेँ विवेकसँ विचारि संगे-संग विचरण करए लगत तखनेसँ ओकर शक्तिमे दूना वृद्धिक संभावना बढ़िते अछि। यएह संभावना ने आगू बढ़ैत सम्पन्नता दिस बढ़ैए..!

समगम विचारक बीच उन्नैतलाल कक्काक मन पहुँचते विचार देलकैन जे जखन दुनू गोरे एकठाम ठाढ़ भऽ परिवारकेँ देखि रहल छी तखन किए ने परिवारक बीच जेतए मनक टुटान भऽ रहल अछि ओतैसँ गप-सप्प करी, विचार-विनिमय करी जइसँ मनक टुटानक जड़ि भेट जाए। जेतए जड़ि भेट जाएत ओकरा पुन: जगबैत ओत्तैसँ जगजिआर करैत आगू दिस बढ़ब...। बजला-

"अखन तक जइ आशा आ उम्मीदसँ परिवारकेँ बुझै छेलौं से नहि अछि। तँए ओइ 'नहि'केँ नीकसँ जानि 'हँ' दिस केना बढ़ाएब, ई जड़ि बात भेल।"

विचारक सहमे सहटैत सोझमतिया काकी बजली-

"हँ से तँ भेबे कएल।"

ओना, बजैक क्रममे सोझमतिया काकी बाजि तँ गेली मुदा उन्नैतलाल कक्काक विचारकेँ जइ सिमानपर सँ बुझक चाही से नहि बुझि पेली। जे उन्नैतलाल काका मने-मन आँकि नेने छला। जइसँ

मन घुरियाए लगल छेलैन जे जइ बातकेँ संगी जकाँ पत्नी बाजि रहली अछि ओ स्वयं बुझि तँ नहि पेब रहली अछि! नइ बुझने जैठामसँ परिवारक नीव पड़त सएह कमजोर भऽ जाएत। तँए नीक हएत जे किए ने पत्नीए-केँ प्रश्नकेँ उनटबैत पुछिऐन जे 'आगू केना डेग उठाएब।'

'आगू केना डेग उठाएब' सुनि सोझमतिया काकी सहैम गेली। सहमबो केना ने करितैथ। परिवारमे देखि रहल छेली जे कियो परिवारकेँ अपन बुझि दिन-राति खून-पसेना एक करैत काजमे लागल रहैए आ कियो काजकेँ विचार बुझि नीक-अधला कहि काजकेँ धरतीपर उतारिये ने रहल अछि। जइसँ ओ स्वयं परिवारक भार स्वरूप बनि गेल अछि। तैठाम वैचारिकतासँ थोड़े काज चलत। ओ तँ तखन चलत जखन हर आदमीकेँ–माने परिवारक भीतर जे जइ सिमानपर अछि–ओकरा ओत्तैसँ गतिशील जिनगी दिस धकेलब। माने काजक जिनगीमे केतौ आगूसँ छोर पकैड़ खिंचब तँ केतौ पाछूसँ आगू मुहेँ धक्कासँ धकियाएब...।

जाबे नइ करब ताबे परिवारमे एकभग्गु गतिशीलता रहबे करत। एकभग्गु गति रहने एकभग्गुपन रहबे करत जइसँ सदिकाल मनक टुट परिवारमे होइते रहत। ओना, कोनो विचारक चोटक असर सेहो मनुक्ख- मनुक्खपर निर्भर करैए। क्रियाशील मनुक्ख ओइ चोटकेँ अपन चोटाएल जिनगीमे उतारए लगैए जे संकल्पक रूपमे ओकरा जिनगीमे उभरैत उठैए जखन कि क्रियाहीन मनुक्खपर वएह चोट जलनशील रूपमे उठैए, जइसँ रंग-रंगक उतरा-चौरी जनमए लगैए। परिणाम स्वरूप डेगे-डेग, पले-पल मनक टुटान बढ़िते जाइए।

अपन नारीत्व गुणकेँ पकैड़ सोझमतिया काकी बजली- "जहिना अहाँ पति छी तहिना ने परिवारोक पतियो आ पितो छिऐ,

तैबीच किछु बाजी से उचित हएत।”

ओना, सोझमतिया काकीक पेट उन्नैतलाल काका परेख नेने छला मुदा क्रियाक जे रूप अछि, माने काज दिस उत्साहित करैक, ओ जँ खुशी मनसँ विचार-विनिमय हुअए तँ ओ ऊँच्च कोटिक भेल...। मुस्की दैत उन्नैतलाल काका बजला-

“जहिना कोनो गाछक एकटा शील होइए आ आगू ओकर डारि-डारिक संग पात होइए तहिना ने परिवारोमे अपना सभ भेलिऐ।”

हुँहकारी भरैत सोझमतिया काकी बजली-

“से तँ भेबे केलिऐ।”

पत्नीक सहमत पेब उन्नैतलाल काका बजला-

“जहिना गाछक शील गाछक धड़ भेल, तहिना परिवारमे सेहो शील रूपमे अछि, जेकरा धड़ रूपमे धारण करैत जखन डारि-पात दिस बढ़ाएब तखने ने परिवार परिवार जकाँ बढ़त।”

ओना, उन्नैतलाल काका एकसूरे बजैक क्रममे बाजि गेला, मुदा सोझमतिया काकी बिच्चेमे अकबका गेली। अकबकाइक कारण भेलैन जे गाछक शील आ डारि-पात तँ आगूमे देखै छेली तँए बुझैमे कोनो भाँगठ नइ भेलैन, मुदा परिवारोमे अहिना अछि से बुझबे ने केलीह। नइ बुझैक कारण ईहो छेलैन जे परिवारक जे ढब समाजमे देखि रहल छेली, ओइ अनुकूल नजैर छेलैन। माने ई जे कोनो पिताकेँ जँ दू सन्तान छैन आ ओइ दुनूकेँ जँ बाल-बच्चामे अन्तर अबैए आ सामाजिक जे परिवेश बनि रहल अछि, पढ़ाइ-लिखाइ, विवाह-दान ओ एकटा नव समस्या परिवारक बीच आनैए। दू भाँइक भैयारी ओहनो अछि जे कसा-मस्सीसँ दुनू भाँइक घर-घराड़ीक अँटावेश भेल अछि, बाँकी जिनगी ओकर हाथ-पैरक बले

छै, तइ परिवारक समस्या आ दस-बीस बीघा जमीनबला किसान परिवारक समस्यामे दूरी तँ अछिए। तँए परिवारमे माता-पिता वा दादा-दादी किए ने होथु परिवारक सभजनसँ पारिवारिक सम्बन्धक संग बेकतीगत सम्बन्ध सेहो ओहने बनक चाही जेहने गाछक संग ओकर डारि-पातक छइ।

अकबकाएल सोझमतिया काकीकेँ कोनो एहेन विचार मनमे उठिये ने रहल छेलैन जे समुचित जगहक समुचित विचार होइतैन। तँए अपनाकेँ पाछू घुसकबैत बजली-

“से केना हएत?”

सोझमतिया काकीक निराएल मनक बेराएल विचार सुनि उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे पत्नी सोल्हन्नी थकमका रहली अछि। ने आगूक बाट देखि रहली अछि आ ने पाछू हटने काजक सद्वैत देखा रहल छैन। होइतो अहिना छै जे जखन कियो कोनो काज वा विचारमे ओझरा ओकर सोझपनकेँ नइ देखैए तखन ओकर मन कखनो ओझपन दिस तँ कखनो बोझपनक बीच नाचए लगिते छइ...। उन्नैतलाल काका बजला-

“परिवारमे जे एक-दोसराक बीच वैचारिक दूरी बनि गेल अछि, जँ ओकरा एक-एकक बीचक दूरीकेँ जाबे नीक जकाँ नइ बुझि जाँचब-परखब ताबे मनक जे मलिनताक दूरी अछि ओकरा नीक जकाँ नहि देखि पाएब। जे टुटनक घाट बना रहल अछि ओकरा केना पकड़ब। आ पकड़ेने ओ केना पुन: स्थापित भऽ पूर्व रूपमे औत। से केना संभव हएत?”

ओना, पतिक विचारकेँ सोझमतिया काकी धियानसँ सुनलैन जरूर मुदा सुनला पछातियो कोनो उत्तर मनमे नइ उठलैन। नइ उठैक कारण भेलैन जे जइ तहमे माने जइ गहराइमे परिवारजनक

बीच मतभेद जगल छैन तइ तहक गहराइमे सोझमतिया काकी जाइये ने पेब रहल छेली। जखन जाइये ने पेब रहल छेली तखन मने केतए विचार करितैन। तँए पतिक मुँह दिस बकर-बकर देखए लगली। ओना, भीतरे-भीतरे किछु बजैक इच्छा जरूर होइ छेलैन मुदा जमीनसँ हटि किछु बाजबो केहेन हएत? ई सोझमतिया काकीक मनकेँ रोकि दइ छेलैन।

अनायास उन्नैतलाल कक्काक मनमे उपकलैन जे चेतनशून्य बनने थोड़े काज चलत। जाबे चेतनशीलता मनुक्खमे नहि औत ताबे ओ बुझिये की सकैए आकि विचारिये की सकैए। तँए सोझमतिया काकीक चेतनशीलताकेँ खोरब जरूरी बुझि उन्नैतलाल काका बजला- "एना चुप रहने काज चलत!"

बजैक क्रममे सोझमतिया काकी पुछि देलखिन-

"से तँ नहियेँ चलत, मुदा...।"

विचारकेँ आगू बढ़बैत उन्नैतलाल काका बजला-

"मुदा की?"

विचारमे ओझराएल सोझमतिया काकी अपन वेवसी परगट करैत बजली-

"अहाँ किछु छी तैयो ते पुरुखे छी किने, अहीं ने ऐगला-पैछला पुरखाक हिसाब बुझबै।"

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन पसीज गेलैन। पसीजते मनमे विचार जगलैन जे जाबे परिवारक मूल बातकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पाएब ताबे आगूक रूप-रेखा केना बना सकब। कोनो घर बनबैले पहिने ओकर नीव लेल जाइए। मुदा नीवो तँ नीव छी। एहेन तँ नहि, जे पँच-मंजिला मकानक नीव आ एक-मंजिला मकानक नीव वा मकानक जगह टटघर-भीतघरक नीव एक्के रंग

हएत। ओ तँ निर्भर करैत अछि जे केहेन घर अहाँ बनबए चाहै छी तैपर? टटघरक नीवपर पँच-मंजिला मकान केना बनि सकैए वा पँच-मंजिले मकानक नीवपर टटघर केना बनि सकैए। ओ तँ निर्भर करैत अछि घरक रूप-रेखापर...।

उन्नैतलाल काका बजला-

“देखू जेते सुगमतासँ बुझए चाहै छी ओ सुगम नइ अछि, तँए..?”

आगूक दिशा-बाट देखिते सोझमतिया काकीक कलेश भरल मन एकाएक कलैश गेलैन। कलैशते बजली-

“समाज हौउ आकि परिवार, हमर बाटक तँ पहिल बटोही अहीं ने छी। तँए अनका केकरासँ पुछबै?”

पत्नीक विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मनमे गुरुत्वक आभास भेलैन। आभास होइते विचार उठलैन जे पहिने परिवारक अखुनका जे स्थिति अछि ओकरा अपने जइ हिसाबे बुझै छी तइ हिसाबे हिनको कहिऐन। जँ केतौ विचारमे अन्तर औत तँ ओकरा वस्तु-स्थिति देखैत सामंजस करब। जँ से नहि औत तँ जहिना बाल-बोधकेँ शिक्षक ‘अ-आ’ सँ ‘कबीर-काने’ तक पढ़ा-लिखा सिखा पुन: विद्यार्थीक मुहेँ सुनि अपन कर्तव्यसँ तुष्टि पबै छैथ तहिना उन्नैतलाल कक्काक मनमे जगलैन। जगिते बजला-

“समाजमे देखिते छी जे परिवारक बीच मन टुटने कियो गरदैनमे फँसरी लगा प्राण तियाग करैए तँ कियो रेलगाड़ीक पहिया तरमे अपन गरदैन दए जिनगीकेँ अन्त करए चाहैए। कियो जहर-माहूर खा मरए चाहैए तँ कियो घर छोड़ि पड़ा जाइए।”

बिच्चेमे सोझमतिया काकी टोनैत बजली-

“से की केकरोसँ चोराएल अछि। सभ बुझबो करैए आ

आँखिसँ गाम-समाजमे देखबो करिते अछि।”

पत्नीक सहटल विचार सुनि उन्नैतलाल कक्काक मन सहीटमे पहुँच गेलैन माने समतल विचार मनमे जागए लगलैन। जगति मनमे उठलैन- जहिना मनुक्खकेँ तहिना परिवारो-समाजोकेँ मोटा-मोटी तीन रूप होइ छइ। पहिल समतल स्थिति जे समय-सापेक्ष होइए आ दोसर होइए समतलसँ निकैल अतल-बीतल आ तेसर होइए अबैबलामे साँझपन माने भविसमे एकरूपता। अपन परिवारक जे अतल-बीतल अछि ओ ओहन नइ अछि जे कियो जहर-माहूर खा मरए चाहैत वा एहनो नइ अछि जे रेलगाड़ीक पहिया तरमे गरदैन दइले तैयार भऽ जाइए वा फँसरिये लगबए चाहैए। मुदा रोगो तँ असान नहियेँ अछि। जहिना तीन स्थितिमे परिवार बँटल अछि तहिना परिवारक श्रमशक्ति सेहो तीन रूपमे बँटि गेल अछि। किछु गोरे परिवारक ओहन समर्पित लोक अछि जे कर्मक पाछू रने-बने वौआइ-ले तैयार रहैत तँ किछु एहेन अछि जे कहलोपर किछु करबो केलक आ किछु मठैरियो देलक आ किछु श्रमचोर नइ अछि सेहो नइ कहब बेइमानीए हएत...।

परिवारक भेदकेँ भेदैत उन्नैतलाल काका बजला- “बड़ भारी ओझरी परिवारमे अछि! गाम दिस ताकब छोड़ि परिवार-परिवारक संग अपनो परिवारकेँ निरखए-परखए पड़त।”

ओना, किछु विचार-विनिमयमे खाँच-खँरोच देखने सोझमतिया काकीक मन सेहो कखनो-कखनो तुरैछ कऽ मुरैछ जाइ छेलैन मुदा समर्पित नजरिये जखन परिवारकेँ देखै छेली तखन बुझि पड़ै छेलैन जे कोनो की हमरेटा परिवारमे एना होइए आकि आनो-आन परिवारमे छइ। जखन सभमे किछु-ने-किछु छइहे आ केहेन बढ़ियाँ चलितो छइहे तखन हमरे कोन अधला अछि। बजली- “अहिना सभ दिनसँ परिवारमे राँड़ी-बेटखौकी चलैत आबि रहल

अछि आ आगूओ चलिते रहत।”

बजैक क्रममे सोझमतिया काकी समगम होइत बाजि तँ गेली मुदा ‘सा-रे-ग-म’क भेदकेँ बुझबे ने कऽ रहल छेली। जे बात उन्नैतलाल काका बुझि गेला। मुदा मनमे ईहो तँ प्रश्न रहबे करैन जे जाबे परिवारक हौउ आकि समाजक मुदा मनुक्खक जिनगीक मूल आधार श्रमशीलता छी। जाबे से मनुक्खमे नै औत आ मनुक्ख श्रमहीन बनत तखने ओकर मन अपना बसमे नइ औतइ। जाबे मन बसमे नइ औतै ताबे ने ओ कोनो प्रणकेँ अपना कऽ चलि सकैए आ ने कोनो ठौर-ठेकानकेँ पेब सकैए..!

मने-मन परिवारक बीच विचड़ैत उन्नैतलाल काकाकेँ भोरुका फल जकाँ एकटा फल आगूमे खसलैन। खसलैन ई जे किए ने परिवारक बीच जे भैयारीक परिवार अछि, ओइ विचारकेँ खण्डित करैत अपन-अपन जवाबदेहीक भार सुमझा दिऐ जइसँ जे परिवारमे सुविधा भोगी जिनगीक बीच पनैप गेल अछि ओकरा रोकैमे सहूलियत हएत। जखने कोनो परिवार वा बेकती श्रमकेँ अपन शील बुझि दुनियाँमे पएर राखत तखने ओकरासँ जरूर आशाक फल भेटत। जखने मनुक्खक जिनगीमे आशक फल फड़ए लगैए तखने ओ आशावान बनि आसे-आस चलए लगैए। जखने आगू मुहेँ लोक चलए लगैए तखने हेराएल-भोथियाएल सभ एकबट्ट बनि जाइए। जखने एकबट्ट बनि चलत तखने केतौ-ने-केतौ एक-दोसरसँ भेँट हेबे करतै। जखन भेँट हेतै आ जिनगीक गप-सप्प करत तखन ओकर बदलल जिनगीक रूप सोझामे एबे करत। मनुक्ख सामाजिक सोभावेटा-क नहि, जिनगीक पथिक सेहो छी किने...। ऐठाम अबिते उन्नैतलाल कक्काक मन फुला कऽ फलाए लगलैन। फलाइते सोझमतिया काकीकेँ कहलखिन- “कहलिऐ ते बड़बढ़ियाँ जे परिवारो आ समाजोमे राँड़ी आ बेटखौकी सभ दिनसँ होइत आबि

रहल अछि। मुदा राँड़ीक समस्या आ बेटखौकीक जे स्थिति अछि तेकरा की बुझै छिऐ?"

गाम-समाजमे जे राँड़ी-बेटखौकी कहैक जे चलैन अछि तही क्रममे सोझमतिया काकी बाजल छेली, तँए कोनो तेहेन गंभीर विचार मनमे नइ छेलैन, मुदा जखन उन्नैतलाल कक्काक मुहेँ ओइ विचारक प्रश्न सुनली तखन सोझमतिया काकी अकबका लगली।

पत्नीक अकबकाइत रूप देखि उन्नैतलाल काका मुस्कियाए लगला। पतिकेँ मुस्कियाइत देखि सोझमतिया काकीक विचारक रूपमे अन्तर आबए लगलैन। अभियन्तरमे अन्तर अबिते बजली-

"जहिना सभ बजैए तहिना हमहूँ बजलौं। तइले अहाँकेँ माख किए होइए।"

पत्नीक मुहसँ 'माख' सुनिते उन्नैतलाल कक्काक मन नचलैन। नचिते मनमे उठलैन- 'माख'क एक अर्थ 'जलन' आ दोसर अर्थ 'ईरखा' सेहो होइए। मुदा मनमे ईहो उठि गेलैन जे परिवारक प्रति कोनो अभिभावककेँ किए 'जलन' हेतैन आकि 'ईरखे' हेतैन? जलन वा इरखा तँ ओहन अभिभावकक मनमे आबि सकैए जे अनेरे ईर्ष्यालु हुअए वा जल-जद हुअए। मुदा अपना संग से तँ नहि अछि...। पत्नीकेँ बौसैत उन्नैतलाल काका बजला-

"देखियौ, राँड़ी-बेटखौकी ने गारि छिऐ आ ने असिरवाद, लोक छोट-मोट रक्का-टोकीकेँ–माने कहा-कहीकेँ–राँड़ी-बेटखौकी कहबो करैए आ बुझबो करैए।"

आगूक बात उन्नैतलाल काकाकेँ पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सोझमतिया काकी अपन विचारमे सक्कतपन अनैत बजली-

"जहिना अहाँ कहलिऐ तहिना ने हमहूँ बाजल छेलौं। तेकरा अहाँ तिलकेँ ताड़ किए बनबै छिऐ।"

पत्नीक उतरैत विचार सुनि उन्नैतलाल काका बजला-

“हम कोनो अधला बुझि थोड़े बाजलौं जे अहाँ ओकरा अधला बुझि गेलिऐ, जे बुझि बजलौं से सुनू।”

पतिक विचार ठीकसँ नहि बुझि सोझमतिया काकी चकोना होइत बजली-

“कनी फरिछा कऽ बाजू।”

पत्नीक बात सुनि उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे बातकेँ विचार रूपमे बुझै चाहि रहली अछि। बजला-

“जइ राँड़ी-बेटखौकीकेँ लोक महत्वहीन बना देने अछि ओ केहेन मारूख अछि से बुझै छिऐ?”

‘मारूख’ सुनि सोझमतिया काकी चौंकैत बजली-

“की मारूख?”

उन्नैतलाल काका बजला-

“अपनो परिवारमे देखियौ आ गामो-समाजमे देखियौ जे केते लोककेँ महत्वहीन काज महत्वपूर्ण समयकेँ नष्ट करैए।”

पतिक विचारकेँ नीक जकाँ सोझमतिया काकी नहि बुझि पेली जे महत्वहीन काज महत्वपूर्ण समयक बीच झील जकाँ केते पैघ मोनि फोरि रहल अछि। बजली-

“से की?”

उन्नैतलाल काका बजला-

“देखियौ, दिन-रातिक बीच जे समय चलैए वएह भेल समयक गति। अही बीचमे जे महत्वपूर्ण लोक छैथ ओ अपन समयकेँ ओहन महत्वपूर्ण काजमे लगबै छैथ जे काज हुनका महत्वकेँ ससरबैत महत्ताप्रसन्न करैक रस्ता दइ छैन। तैठाम जँ समयकेँ राँड़ी-

बेटखौकीक पाछू गमाएब तखन ओकर फल केहेन भेटत।”

ओना, सोझमतिया काकी पतिक विचारक धारमे बहैत भँसिया कऽ बीचमे आबि गेल छेली, मुदा समयकेँ परेख कऽ पकैड़ लेब, ओ गैंची माछ जकाँ मनसँ ससैर जानि जइसँ पकड़मे एबे ने करैन। मुदा जहिना आनो-आन पत्नी पतिक विचारकेँ आँखि मुइन स्वीकारि बजैत जे ‘हँ से ठीके’ तहिना सोझमतियो काकी बजली-

“हँ से ठीके।”

ओना, उन्नैतलाल काका बुझि गेला जे बिनु बुझने ‘हँ से ठीके’ कहली मुदा मनमे एते खुशी तँ जगबे केलैन जे ‘हँ से ठीके’ तँ जरूर कहली। बजला-

“देखू, अपने दुनू परानी एहेन छी जे अहू उमेरमे एते खटि कऽ जीबै छी। देखते छिऐ गाममे जे अपन संगी-तुरिया छल तेकरा के कहए जे केते नवकबरियो बाबाधाम पहुँच गेल। तँए अपने केना अपन विचारक अनुकूल चलब बस एतबे बुझबो अछि आ करितो चलब अछि।”

सोझमतिया काकीक मनमे उठलैन जे जखन सभ अपने-अपने-ले सोचबो करत आ करबो करत तखन परिवारे आकि समाजे केना चलत..?

ओना, सोझमतिया काकीक विचारक विपरीत दिशामे उन्नैतलाल काका जमीन तक पहुँच गेल छला जइसँ सोझमतिया काकीक विचारक गहराइ परेख नेने छला मुदा ओकरा तहियबैत बजला-

“जखने सभ अपना-अपना-ले करए लगत तखने ओकरामे आगू बढ़ैक विचार जगत। यएह बढ़ब भेल जिनगीमे बाढ़ि आएब।”

ओना, उन्नैतलाल कक्काक मनमे ईहो उठैत रहैन जे ईहो बात

पत्नीकेँ कहिये दिऐन जे बाढ़ियो-बाढ़िमे भेद अछि। नीको अछि अधलो अछि। मुदा से नहि बजला।

तैबीच सोझमतिये काकी पुछि देलकैन-

“केना बाढ़ि दिस बढ़ियाएत?”

पत्नीक विचारसँ सहमत जगबैत उन्नैतलाल काका बजला-

“एकबट्टूओ आ बहुबट्टूओ दुनू बाढ़िक अछि। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे एकबट्टू भेने क्रियमान शीलक उदय लोकोमे आ परिवारो-समाजमे अबैए।”



शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017

बाबा बेलेश्वरनाथ

जुड़शीतल पाबैन। भोरेसँ लोक अपन अँगनाकेँ नीरसँ नीरबैत रस्ता-पेरा नीरा रहल अछि। ओना, अपनो नीन टुटल अनहरगरे, किए तँ चारि बजे भोरेसँ धियो-पुतो आ जरो-जनानी चापाकलसँ पानि भरि-भरि नीरेबो करै छेली आ जोर-जोरसँ 'जय शिव, जय शिव' बजितो छेली, जइसँ नीन टुटि गेल छल। मुदा ओछाइन नइ छोड़ने छेलौं। ओना, मनमे छेलए जे गाछ-बिरीछमे जलढार करैक अछिए। मुदा ओ तँ अछि गाछी-बिरछीमे, जे आँगन आकि आँगनसँ सटल रस्ता-बाट नहि छी। ओ तँ घर-आँगनसँ हटल अछि। तैठाम एते अन्हारमे जाएब नीक नहियेँ हएत। ओना, पाबैनियोँ की कोनो क्षण-पलक छी जे क्षणेमे क्षणाक भऽ जाएत आकि पलेमे पलैक जाएत। ओ तँ भरि दिनक छी तँए औगतेनाइयो नीक नहियेँ अछि। तहूमे नमगर-चौड़गर बाड़ी-फुलवारी अछिए।

चालीस बरख पूर्व जखन कौलेज छोड़ि गृहस्ताश्रममे घरियेलौं तही समय आठ कट्ठामे फलक गाछ सभ सेहो रोपलौं। सभ रंगक– अपना जनैत जे उपलब्ध भेल–गाछ रोपलौं। ओना, आमक गाछ बेसी रोपलौं। मुदा एक-एकटा गाछ बेल, लताम, लीची, सरीफा, आँता, धात्रीम इत्यादि सेहो रोपलौं। आममे बेसी कलमी लगेलौं। कलमियोमे बेसी कलकतिया आ एक-एक गाछ बम्बै, सपेता, फैजली आ राइर सेहो रोपलौं। तैसंग दू कट्ठा करजान सेहो लगेलौं। ओना, केराक खेती करैमे शुरूए-मे गजपटा गेल, मुदा तेरह-चौदह

रंगक केरा नइ रोपलौं सेहो नहियेँ छल। खेती गजपटा ई गेल जे सभ केराकेँ केरे बुझि रोपि देलिऐ जे पछाइत बौना सभकेँ छरगरहा तेना कऽ ऊपरेसँ झाँपि देलक जे ओ सभ जनमरोगी भऽ गेल। जनमरोगी भेने कुहैर-कुहैर बढ़बो कएल आ फड़बो कएल जे गहनमरू जकाँ भेल।

सघन गाछी आ करजान रहने आन साल गाछीक सभ गाछो आ करजानक सभ बीटोमे जुड़शीतल दिन जलढार करैत एलौं, मुदा चैत-बैशाखक सिमानपर जेहेन जलधार हेबा चाही से तँ नहियेँ कऽ पबै छेलौं मुदा तैयो एते करिते एलौं जे बाल्टीमे पानि भरि-भरि लऽ जाइ आ लोटे-लोटा गाछक जड़िमे दऽ दिऐ। ओना, आइये तुलसी गाछमे सेहो लोक पनिसल्ला टाँगत, जे मास दिन टँगल रहत। बाँसक टोनक दूटा खुट्टाक बीच बल्लामे सीकपर टाँगल कलशक पेनीमे छेद बना कुशकेँ जड़ि दिससँ छेदक भीतर कलशक जलमे सिक्त होइत बुन्ने-बुन्न-ठोपे-ठोप जल तुलसीक मुँहपर सँ होइत जड़ि तक सिक्त करिते अछि। मासो दिन पोखैर-इनार वा चापाकलक जल ओइ कलशमे देले जाइए। से मात्र पौध जगतक खाली एकटा तुलसी गाछमे। ओना, माटिमे मटियाएल पूर्वजक जे सारा छैन तहूठाम लोक पनिसल्ला टँगिते अछि। खाएर जे अछि मुदा प्रश्न तँ ऐठाम उठबे करत जे एकटा तुलसीए-टा गाछमे किए? पौध जगतमे लाखो रंगक पौधा अछि। एकसँ एक गुणवान, एकसँ एक धनवान, एकसँ एक रूपवान, एकसँ एक फलवान तैठाम तुलसीए-टा किए? ओना, पौध जगतमे श्रेष्ठ पौध ओ भेल जेकर पाँचो अँग गुणवान अछि। मुदा तोहूमे तुलसीए-टा नहि अछि, अनेको अछि...।

भोरक सिरखार जागए लगल। राति भरिक अन्हराएल दुनियाँ अन्हारसँ हटैक कऽ इजोत दिस ससरए लगल। मनमे अपन जुड़शीतल पाबैनक दिन नचैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ होइते

चालीस बरख पूर्वक लगौल अपन बाग-बगीचा मोन पड़ल। पूर्वजक जे लगौल गाछी-कलम आ बाँस-बँसवारि छल ओ पढ़ाइ-लिखाइसँ केस-मोकदमा तकमे ओरा गेल छल। तँए पूर्वजक गाछ-बिरीछक रूपमे किछु ने रहि गेल छल। ओना, जइ समय बगीचा लगेलौं तइ समय पूर्वजक ओते सभ चीज छल जइसँ परिवारक अँटावेश होइत रहल। जेना-जेना पूर्वजक सम्पदा घटैत गेल तेना-तेना अपन लगौल बढ़ैत गेल। ओना, अपनो लगौलहा माने शुरूक लगौलहा, खसबो कएल सुखबो कएल आ काज-ले कटबो केलौं। तैसंग लगबितो-रोपितो गेलौं। पहिल बेरक–माने शुरूक लगौलहा–जे गाछ छल ओइमे खाली एकटा बेलक गाछटा बँचल अछि। ओ बेलक गाछ गाछीक दछिनबरिया-पछबरिया कोणपर अछि जे पड़ोसीक बँसवारिसँ तेना झँपा गेल जे ने कहियो भरि गाछ फुलाएल आ ने भरि गाछ फड़ल। मुदा चालीस बर्खक बीच अपनो तेनाहे सन बेलकेँ बुझैत रही, जइसँ मनमे कहियो सटल नहि, हटले रहल। तेनाहे जकाँ ई बुझैत एलौं जे बेल काँटेक फल छी। गाछक सौंसे देह काँटे रहै छइ। तहूमे सभसँ नमहर काँट बगूरक होइतो बेलक काँट जकाँ ने सक्कत होइए आ ने बीखाह। ओना, ई गुण जरूर छै बेलक काँटमे जे बगूर जकाँ पैरमे गड़ि कऽ टुटि नइ जाइए, जे सूइया वा आन कोनो औजारसँ निकालए पड़ैत। तेतबे किए, आन-आन काँटकेँ निकालैक औजार सेहो बेलक काँट छीहे। मुदा सभ कथुक बाबजूदो अखन तक अपने बेलकेँ काँटे आ लस्सेक फल बुझैत आबि रहल छेलौं। लस्साक फल ई भेल जे विद्यार्थी जीवनमे जखन कोनो किताब वा कॉपी साटै-जोड़ैक काज पड़ै छल तखन काँच बेल तोड़ि कऽ आनै छेलौं आ ओकर लस्सासँ साटै छेलौं। जे अखनो ओहिना मनकेँ पकड़ने अछि जहिना शुरूमे पकड़लक।

ओना, जुड़शीतल पाबैन दिन बेलक गाछक जड़िमे साले-साल

एक लोटा पानिसँ जलढार नइ करै छेलौं सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जरूर करै छेलौं। ओछाइन छोड़ैक सभसँ पैछला बात यएह मनमे आबि गेल जे आइ सभसँ पहिने बेलेक गाछमे जलधारो करब आ देखबो करबै जे ऐ बेर फड़ल अछि आकि नहि। जुड़ेशीतल पाबैन ने छी, आइ लोक बेलेसँ मनकेँ जुड़बैए। मनुक्ख ने पौध जगतकेँ जलसँ जुड़बैए मुदा बेल तँ पौध जगतक ओ मुनि छी जे फलसँ जुड़बैए।

ओछाइन छोड़िते मनमे जेना एकटा लहैर जकाँ उठल जे सभ किछु छोड़ि, माने मुँह-कानमे पानि लेबसँ लऽ कऽ चाह-पान तककेँ छोड़ि पहिने बेलक गाछक जड़िमे पानियोँ देब आ ओकर देहो-दशा देखबै आ फुलो-फल देखब। ओना, अखन ओकर फलकेँ पकैक समय आबि गेल अछि, पछाइत पतझाड़ सेहो हएत, मुदा दुनूक फलो आ पातोक पकैक समय तँ चलिये रहल अछि। आन-आन फल जकाँ बेल नइ ने छी जे फल-पातक जीवन-मरण संगे नइ होइए। अखाढ़क बून पबिते कलशब शुरू होइए, जे रसे-रसे परिपक्व होइत जाइए माने जुआइत जाइए आ बरसातक उतार अबैत-अबैत फूल कोढ़ीक रूपमे पनैप भकरार भऽ कऽ फुलेबो करैए आ फड़क तरी सेहो पकड़ैए।

आन फल सभसँ एकटा अन्तर बेलमे आरो छै जे आन फल जेना मौसमी होइए माने सालक तीन मौसम–जाड़, गरमी आ बरसात–क अलग-अलग फल सेहो अछि जे एक्के मौसममे जन्मसँ मृत्यु धरि गुजरैए आ कोनो एहनो अछि जे एक मौसममे जन्मसँ सियान होइए आ दोसर मौसममे आबि फड़ै-फुलाइए, तेना बेल नइ अछि। अखाढ़ी साल जखन शुरू होइए तखन नव रंग-रूपमे कलैश जन्म लइए आ बरसातक संग-संग चलैत उतार तक माने मौसमक उतार तक, अबैत-अबैत जुआनी पेब लइए। जुआनी पबिते मुण्डे-

मुण्डे फुला जाइए आ फुलेक बीच फल सेहो सिरजए लगैए आ भरि जड़कल्ला अपन रछिया करैत जीवनो बीतबैए आ रसे-रसे बढ़िते अछि, जे गरमी धबिते अपन कोषाइक रूप पकड़ए लगैए। जेना-जेना गरमी मौसम धबैत-धबैत तबधए लगैए तेना-तेना फलक रूप-रंग सेहो अपन परिपक्व रूप पकड़ए लगैए, जे चैत-बैशाखक सिमानपर चढ़ि जलदाताकेँ माने रोपनिहारकेँ फलदाता बना भरि मौसम फलदान करैए। मुदा आन फल जकाँ नहि जे परिपक्व होइत-होइत अपनो खसए-पड़ए लगैए आ कौओ-बंचर खाए लगै छइ। ओ अपन सीमा–माने गाछक फलक डन्टीक रूपमे–ताधैर पकड़ने रहैए जाधैर हाथ पकैड़ ओकरा घर नहि अनबै। ओना, गोटि-पंगरा रोगसँ रोगा खसबो-पड़बो करिते अछि। तेतबे नहि, जँ हाथ पकैड़ घर नइ अनबै तँ की ओ अपन घर छोड़ि पड़ा जाएत? नहि पड़ाएत! किए पड़ाएत? ओहिना फल कहबैए? जँ ओकरा माने बेलकेँ पकैड़ घर नइ आनब तँ ओ अपने घरमे–माने गाछेमे–समाधि लगा पुन: आगूक जिनगी सेहो पेब लइते अछि। माने छोटकी बेल हल्लुक रहने केते गाछेमे लगले रहि जाइए। जे पुन: आगूक सालक फलक संग अपन जिनगी बितबैत संगे-संग चलैए...। समैयक मनक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल। जेना-जेना मनक जिज्ञासा बढ़ए लगल तेना-तेना बेलसँ सिनेह सेहो बढ़ैत गेल।

मोन पड़ल अपन रोपल बेलक गाछ। खालीए बाल्टीन आ लोटा लेलौं आ गाछी दिस विदा भेलौं। खलिये बाल्टीन लइक कारण छल, घरसँ हटल गाछी अछि। मुदा गाछीक बगलमे शिव मन्दिरक आगूमे छोट-छीन पोखरियो छै आ चापाकलो छइ। छै इनारो मुदा ओ मरणे भऽ गेल अछि।

अँगनासँ निकैल जखन रस्तापर एलौं तखन मोन पड़ल अपन रोपल बेलक गाछ...।

कौलेजमे जखन पढ़ैत रही तखन केतेको साथीकेँ अपनो ऐठाम आम खुअबै छेलौं आ आनो-आनो ऐठाम अपनो खाइ छेलौं। आमेटा नहि, लीची-लताम सेहो खाइ छैलौं। एकटा सिनेही संगी बेल खाइक नौत देने रहैथ ओ मोन पड़ल। ओना, बेलसँ सिनेह नहि बनल छल मुदा बेलक नौत मानि जे खेने रही ओ मनसँ हेरा गेल। माने बेलक गुण-धर्म बिसैर गेलौं आ बेल काँट आ लस्साक फल छी, यएह विचार मनमे जीवित रहि गेल।

संगीक नौत मनमे अबिते नव सिरासँ बेलकगुण-धर्म मनमे आएल। मनमे अबिते नाचि उठल जे बेल खाइले संगी सोझामे अनलैन। अढ़ाइ-तीन किलोक फल बुझि पड़ल। तेहेन गाढ़ रंगसँ रंगाएल छल जे आँखि हटए नहि चाहैत रहए। संगीकेँ कहलयैन-

“एहेन बेल जिनगीमे आइ पहिल दिन देखलौं!”

ओना, ओइठाम संगीक माइयो रहथिन। हमर बात सुनिते माइक मनमे ओहन आनन्दक लहैर दौड़ गेलैन जेहेन कोनो शिक्षककेँ अपन पढ़ौल विद्यार्थीकेँ युनिवर्सिटीमे पहिल स्थान पौने होइ छैन। मने-मन माए मुस्कियाइत रहली मुदा बजली किछु ने। संगी बाजल-

“पिताजीक ई अपन अनुसन्धान छिऐन।”

संगीक पिताक सम्बन्धमे नइ बुझल छल तँए कोनो माने नइ लगल। बजलौं-

“की अनुसन्धान?”

संगी बाजल-

“पिताजी कृषि वैज्ञानिक छैथ आ युनिवर्सिटीमे कार्यरत सेहो छैथ। वएह बेलक अनुसन्धान केलैन अछि। हुनके लगौल बेलक बगान अछि, जइमे रंग-रंगक बेलेटा अछि।”

बेलकेँ देखबैत संगी बाजल- "ओहिना खाएब आकि शरबत बना कऽ पीब?"

बेल देखि मन एते ललैच गेल छल जे हुअए छाती लगा ली। बजलौं- "खेबो करब आ पीबो करब।"

हाथेसँ दाबि संगी बेल फोड़लैन। बीआक दरस नहि। सौंसे बेलमे मात्र पाँच-छहटा बीआ। ओइ दिनक बात आइ पुन: मोन पड़ल जे बेल लस्सेक फल टा नहि छी। ओना, बेल सन लसियाह दोसर फल नहि होइए, मुदा तँए बेलकेँ लस्सेक फल बुझल जाए सेहो तँ नीक नहियेँ अछि। जे बिसैर गेलौं। बिसरैक कारण ईहो भेल जे छोटकी बेलीसँ लऽ कऽ मझोलका बेल तक जे देखैत एलौं ओइमे बीआक संग लस्साक मात्रा बेसी होइते अछि।

बेलक पाँचो-छबो बीआ देखि नइ रहल गेल। मुँह छोड़ि संगीसँ बीआ मांगि लेलौं। बीआ मंगैक पाछू यएह मनसा छल जे उच्च कोटिक ऐश्वर्यवान फल छी जेकरा पोनगा अपनो ओहन फल रोपि खाएब। बीआ मंगैत बजलौं-

"संगी, छुच्छे बेलेटा नइ खाएब, मोटरी बान्हि बीओ नेनहुँ जाएब।"

बीआक नाओं सुनिते संगीक माए बिहुसि गेली। पतिक वंशक संग अपनो आ दोसरोक विरधी देखि जनु मनमे ठहैक गेलैन पतिक कृति, जे कृतिक वृतिमे पत्नीक रूपमे सतैत तैयार रहली।

तैबीच संगी बाजल-

"संगी, बेलक गाछ दुनू रूपेँ होइ छै, बीओसँ आ ओकर सिरसँ सेहो होइ छइ।"

ओइ दिनमे–माने विद्यार्थी जीवनमे–सोल्होअना बेलक सम्बन्धमे अनाड़ी रही। मुदा जैठाम बीआसँ गाछ बनैक प्रश्न अछि

आ गाछसँ पात-फल आ फलक बीच बीओक प्रश्न अछि ओ तँ गंभीर विषय भेबे कएल। जे आइ मोन पड़ि रहल अछि। ओना, गाछक सम्बन्धमे बाजल रही-

“संगी, दुनू फल–माने सिरक गाछक फल आ बीआ गाछक फलमे–किछु अन्तरो हएत?”

बुझबैत संगी कहने रहैथ-

“बीआसँ जे गाछ हएत ओकरा जँ कम-सँ-कम तीन बेर जगह बदैल दिऐ माने तीन बेर एक जगहसँ दोसर जगह उखारि रोपब तखन ओहो ओहने फल हएत जेहेन सिरक गाछक होइए। ओना, सिरक गाछ कलमी भेल। कलमीक माने भेल गाछसँ गाछ बढ़ब।”

चालीस बरख पूर्वक बात मोन पड़िते बेलक गाछ आरो मनकेँ डोरियेलक। शिव मन्दिरक आगू जे पोखैर अछि ओही घाटपर बाल्टीमे पानि भरि ‘जय शिव’ करैत मने-मन सुमिरन केलौं जे ‘हे भोलेनाथ, अपनेक प्रिय बेलपात रहल अछि तँए पहिल लोटा जल अपनेक जे प्रिय पातक दाता अछि तहिक जड़िमे जलधार करब।’

बाल्टीनेमे लोटा डुमा देलिऐ आ पानिसँ भरल बाल्टीन नेने बेलक गाछ लग पहुँचलौं। पहुँचिते सजीव सुगन्ध लागल, चन्दनक सुगन्ध जकाँ। ओना, धियानमे नइ रहल रहए, मुदा एकाएक मोन पड़ल जे जखन लोअरे प्राइमरी स्कूलमे पढ़ैत रही तही दिनमे मास्टर साहैब एकटा जीवन्त कथा कहने रहैथ वएह मोन पड़ि गेल। कहने रहैथ जे अपना गाममे जीवन्तलाल काका छला। जीवन्तलाल काका अपने हाथे अपन जिनगी चलबैत रहैथ। गाछी-कलम सभ लगौने छला। एकटा बेलक गाछ सेहो रोपने छला। काका जखन अस्सी बर्खक भेला तखन बेलक गाछ सुखि गेल। अपने ओछाइनपर पड़ल रहैथ। सुखल गाछ देखि बेटा लगमे आबि कहलकैन- ‘बाबू, बेलक

गाछ सुखि गेल!’

‘बेलक गाछ सुखि गेल’ सुनिते जीवन्तलाल काका मने-मन खूब खुशी भेला। मुदा बेटाक आगूमे अपन खुशी नइ देखबए चाहलैन, किएक तँ एक फलक आशा बेटाक मनसँ टुटैत रहैन। तहूमे बेल सन फलक आशा।

पिताकेँ चुप देखि बेटा दोहरा कऽ कहलकैन- ‘बाबू, बेलक गाछ सुखि गेल!’

दोहरा कऽ सुनिते जीवन्तलाल कक्काक मन तरैप कऽ राजा बनि गेलैन। राजा बनिते बेटाक प्रति मनमे उठलैन- लगौता एकोटा गाछ नहि मुदा खेता बेले! मुदा बजला किछु नहि। किएक तँ मनमे नचैत रहैन जे चन्दनक गाछ रोपलौं हम आ चन्दनक लकड़ीसँ लहास जरत अनकर। मुदा मनक बात मनेमे जीवन्तलाल काका रखि बजला-

“राजा दैवक कोनो ठेकान अछि, जखन अपनो सुखिये रहल छी तखन बेले गाछ सुखल तँ की करबै। मुदा एते कहै छिअ जे गाछ ओइ दिन कटिहह जइ दिन मरब। ओही लकड़ीसँ जरबिहह।”

पिताक बात सुनि बेटा सहमलैन। सहमैक कारण भेलैन जे बेलक लकड़ी तँ जरौल नहि जाइए, माने भानस करैकाल चुल्हिमे! तखन मृत्युक पछाइत केना एहेन लकड़ीसँ लाश जरौल जाएत..?

ओना, जीवन्तलाल काकाकेँ बुझल रहैन जे चन्दनक लकड़ीसँ राजे-महराजक लाश जरौल जाइए। अदना-गोदनाकेँ ओहन वस्तु नसीव केना हएत। यएह विचार जीवन्त लालकेँ साधारण जिनगीसँ ऊपर उठा राजाक मन बना देने छेलैन।

ओना, पिताक विचारकेँ चलन्तलाल आँखि मुइन माननिहार, तँए विचारकेँ बेसी काट-खोंट नहि करि मानि बजला- “बड़बढ़ियाँ।”

बेलक गाछ लग ठाढ़ भऽ हिया-हिया चारू दिस तकलौं जे सुगन्ध बाहर दिससँ ने तँ अबैए। मुदा कोनो हवा तैकाल नइ बहैत छल जे किम्हरोसँ अबैत बुझितौं। मनमे जे शंका उठि गेल छल ओइकेँ समाधान करैले बाल्टीनकेँ ओत्तै छोड़ि गाछक दोसर भाग दिस पहुँच हिया-हिया चारू दिस हियेलौं तँ किम्हरोसँ किछु आभास नहि भेल, तखन मन मानि गेल जे बेलेक सुगन्ध छी।

पुन: बाल्टीन लग आबि ठाढ़ भऽ बेलक गाछकेँ हिया कऽ ऊपर देखलौं तँ तीनटा फलक संग पातोकेँ पकैक अवस्थामे देखलिऐ। माने बेलो ललिया गेल छल आ बेलक पातो ललियाइक बाट पकैड़ नेने छल। बेल तँ फल छी, ओकरा खाएब मुदा पातो तँ झड़बे करत। माने पकि कऽ खसबे करत, पतझाड़ हेबे करत। पतझाड़ भेला पछातिये ने समय पेब नव मुड़ीक संग नव कलश कलशत। जइसँ फेर ओहिना हरिया कऽ सघन भऽ फुलाएत-फड़त। तखन जँ जलधार करए एलौं ओ तँ खाली पतझड़ गाछेक ने हएत। मुदा लगले मनमे दोसर बात उठि गेल। उठि गेल ई जे वृक्षमे ने ई गुण अछि जे जड़िमे जल देने डारि-डारि, पात-पात, मुड़ी-मुड़ी जुड़ाइए।

ओना, आइ धरि कहियो ने बेलक गाछक जड़िमे ताम-कोर केने छेलौं आ ने तुलसी गाछ जकाँ पनिसल्ला टाँगि मासो दिन जलधार केने छेलौं मुदा तैयो बेल अपन शील-गुण बनौनहि अछि। बाँसक दबौठमे पड़ने जे बढ़बारि हेबा चाही से नइ भेलै, मुदा तँए ओ अपन शील-गुण गमा बदलबो तँ नहियेँ कएल।

..मोन पड़ल चालीस बरख पूर्वमे लगौल गाछी-कलम। पहिल तोड़क माने शुरूक लगौलहा सभ गाछ उपैट गेल जे दोहरा-दोहरा लगेलौं। मुदा बेलक गाछ तँ वएह छी जे शुरूमे लगौने रही।

ओना, आन फलक–माने आम-जामुन इत्यादिक–गाछ जकाँ

बेलक बढ़बारियो नइ छै मुदा तँए ऐ गाछकेँ ईहो नइ कहल जा सकैए जे ओ आम-जामुन जकाँ विशाल नइ होइए। किछु फल एहनो अछि जेकर गाछ नमहर नइ होइ छै आ किछु झाड़ियो रूपमे अछिए। मुदा बेलक अपन शील-गुणक संग बढ़बारियो आ नमहर औरुदो तँ छइहे...।

जहिना विचारक शील-गुण भेल ओकर जीवन्तता, तहिना मनुक्खक शील-गुण भेल ओकर 'आचार-विचारक जीवन्तता', जे संग-संग चलैए। ओना, समैयक संग ओइमे साँप जकाँ केचुआ छुटैत जाइए आ ओ नव जीवन प्राप्त करैत जाइए। मुदा शील तँ शील छी, ओ तँ मनुक्खक जिनगीक संग बनले रहत। जहिना मनुक्खक जिनगीक संग ओकर शील-गुण इतिहासक कालखण्ड बनि जीवित रहैए तहिना ने बेलेश्वरनाथक शील-गुण सेहो छैन्हे।



शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017

Notes